

स्वात्मबुद्धिप्रकाश

वीर संवत्-२५३७ : अंक-१६८ वर्ष - १५ : अक्टोबर-२०१९

भाद्रपद सुद ३, मंगलवार ता. ५-०८-१९७८.

बडेनश्रीनां वयनामृत-२१५, २१६ उपर

पूज्य गुरुदेवश्री कानज्जस्वामीनुं प्रवचन, प्रवचन-८६

मुमुक्षु जव शुभ में लगता है, परंतु अपनी शोधक वृत्ति
बड न जाय-अपने सत्स्वरूप की शोध चलती रहे इस प्रकार
लगता है. शुद्धता का ध्येय छोडकर शुभ का आग्रह नहीं रभता.

तथा वड 'मैं शुद्ध हूं, मैं शुद्ध हूं' करके पर्या की अशुद्धता
को भूल जाय-स्वच्छंद हो जाय ऐसा नहीं करता; शुष्कज्ञानी
नहीं हो जाता, हृदय को लीगा हुआ रभता है. २१५.

'वयनामृत'. यड आत्मा सर्वज्ञ परमेश्वर ने जो देभा और कडा,
त्रिलोकनाथ, जिनेश्वरदेव सर्वज्ञ प्रभु, पूर्ण स्वरूप आनंद और पूर्ण ज्ञानघन,
उसकी दृष्टी करनी. ऐसा कडा, तो सम्यग्दर्शन होगा. क्रियाकांड, दया,
दान, व्रत, भक्ति का परिणाम वड कोई धर्म नहीं. वड धर्म नहीं है
और धर्म का कारण भी नहीं. कठिन बात, भाई ! अंतर में भगवान
पूर्ण आनंद ध्रुवधाम, स्थान... आडा..डा..! उस पर दृष्टि देकर, ध्रुव को
ध्येय बनाकर, दृष्टि में जो सम्यग्दर्शन होता है, त्रिकावी आनंद का अनुभव
होता है, तब सम्यग्दर्शन होता है. धर्म की पडली सीढी (यड है).

'मुमुक्षु जव शुभमें लगता है,...' मुमुक्षुजव में शुभभाव आता है.
लेकिन उस शुभभाव में लक्ष्य जोर नहीं जोडना. 'परंतु अपनी शोधक
वृत्ति बड न जाय' आडा..डा..! मैं चैतन्य पूर्णानंद शुद्ध वस्तु हूं, ऐसी
शोधकवृत्ति न जाय और शुभभाव हो. समज में आया ? श्रवण करने



में, वांग्यन में, भक्ति में शुभभाव तो आता है, लेकिन मुमुक्षुत्व को शुभभाव होने पर भी, उसकी शोधकवृत्ति—शुद्ध की शोधकवृत्ति होती है. आडा..डा..! जगत को ऐसा कठिन काम, बापू !

‘शोधक वृत्ति बह न जाय—अपने सत्स्वरूप की शोध चलती रहे...’ आडा..डा..! अंतर भगवान पूर्ण अनंत शांति और आनंद का धाम, प्रभु ! मुमुक्षुत्व को सम्यग्दर्शन होने से पहले भी... आडा..डा..! शुभभाव आता है, फिर भी वहां शुद्ध की शोधक दृष्टि चलती है. आडा..डा..! ऐसा काम है. कठिन काम. एक तो संसार के काम से कुरसद न मिले. उसमें पांय-पयास लाभ या करोड-दो करोड मिले, तो मर गया वहां. हम चैसेवाले और हम लक्ष्मीवाले... अरे...! प्रभु ! क्या है लेकिन ? शुभराग है वह भी तेरी चीज नहीं. आडा..डा..!

शुभराग आता है, लेकिन धर्मात्मा होने की लायकातवाले मुमुक्षु की अंतर शुद्ध स्वभाव की शोधकवृत्ति न जाये. आडा..डा..! कोई भी प्रसंग हो. लेकिन उसको अंतर शुद्ध चैतन्य... आडा..डा..! पूर्णानंद का नाथ परमात्म स्वरूप से बिराजमान आत्मा है. यह कैसे बैठे ? अंतर वस्तु भगवान परिपूर्णा स्वरूप आत्मा है. शुभभाव आने पर भी, मुमुक्षु की अंतर शुद्ध सत्ता की शोधकवृत्ति न जाये. आडा..डा..! समज में आया ?

मुमुक्षु :- शोधकवृत्ति अर्थात् ?

पूज्य गुरुदेवश्री :- शोधकवृत्ति अर्थात् अंतर की ओर का वलण. आडा..डा..! मार्ग, भाई ! अलौकिक मार्ग है, प्रभु ! सम्यग्दर्शन पाने से पहले भी, सम्यग्दर्शन होता है, वह तो त्रिकाली आनंद के नाथ का अनुभव और अतीन्द्रिय आनंद का स्वाद आता है, तब सम्यग्दर्शन होता है. आडा..डा..! अभी धर्म की पहली सीढ़ी... यारित्र तो कौई अलग चीज है. आडा..डा..!

यहां कड़ते हैं कि, मुमुक्षु ऐसे कड़ें, भोक्ष का

अभिलाषी, उत्कृष्टित ऐसा ज्व एसे कड़ें कि शुभभाव होने पर भी (उसकी स्वरूप की शोधक वृत्ति यही नहीं जाती). दया, दान, प्रतादि, भक्ति आदि, प्रभु का नामस्मरण वह सब शुभभाव है, वह धर्म नहीं, वह धर्म का कारण भी नहीं. आडा..डा..! ऐसी बात. मुमुक्षु :- अशुभ से बचा एतना तो धर्म हुआ न.

पूज्य गुरुदेवश्री :- अशुभ (से बचना) उसे कहां है ? मिथ्यादृष्टि जाने के बाद म्शुभ से बचने को शुभ आता है. अभी तो मिथ्यात्व अशुभ है वहां किससे बचे ? सूक्ष्म बात है, भाई ! वर्तमान में बहुत गडबड हो गई है, भाई ! जिंदगी यही जा रही है. आडा..डा..!

यह भगवान आत्मा अतीन्द्रिय आनंद का सागर अंदर... आडा..डा..! उसकी शोधकवृत्ति मुमुक्षु को शुभराग के काल में भी... आडा..डा..! न जाये. आडा..डा..! अरे..रे..! यह क्या ? जगत को कहां कुरसद (है) ? सारा दिन सिर्फ पाप... पाप.. और पाप. यहां तो पुण्य के काल में शोधकवृत्ति (जाती नहीं), उसकी बात करते हैं. आडा..डा..! समज में आया ?

भगवान चैतन्य शुद्ध सत्ता, परमसत्ता प्रभु की—आत्मा की—उसे अशुभभाव के समय तो ठीक, वह तो पाप है, वहां तो प्रेम नहीं होना चाडिये, लेकिन शुभभाव में भी, उस काल में भी, उसका प्रेम नहीं (होता). अंतर शोधकवृत्ति में जिसकी दृष्टि जाती है. आडा..डा..! ऐसी बातें अभी पकडनी कठिन (पडे). आडा..डा..!

‘अपने सत्स्वरूप की शोध चलती रहे...’ आडा..डा..! अंदर चैतन्य भगवान को शोधने... आडा..डा..! एक लडका जो गया हो तो शोध कीतनी करते हैं ? कहां गया ? कहां है ? आडा..डा..! वैसे भगवान आत्मा, राग के प्रेम में भगवान आत्मा अपने को भूल गया. आडा..डा..! अब मुमुक्षुपना जब अंदर होता है, तब शुभराग के काल में भी अंतर की

શોધકવૃત્તિ ન જાય. આહા..હા..! શુભભાવ મેં તલ્લીન ન હો. આહા..હા..! એસી બાર્તે હેં. અનજાને લોગોં કો એસા લગે કિ યહ કેસા ધર્મ હે ? એસા કભી સુના નહીં, ભાઈ ! જૈનધર્મ કોઈ પક્ષ નહીં, કોઈ સંપ્રદાય નહીં હે, યહ તો વસ્તુ કા સ્વરૂપ હે. આહા..હા..! જિનસ્વરૂપી ભગવાન આત્મા, ત્રિકાલ જિનસ્વરૂપ, રાગ કે કાલ મેં ભી જિનસ્વરૂપ કી શોધકવૃત્તિ, વીતરાગ સ્વભાવી આત્મા કી શોધકવૃત્તિ ન જાય. આહા..હા..!

‘શુદ્ધતા કા ધ્યેય છોડકર શુભ કા આગ્રહ નહીં રખતા.’ આહા..હા..! મુમુક્ષુ હે, લેકિન શુદ્ધ ચૈતન્ય ભગવાન પરિપૂર્ણ પવિત્ર, પ્રભુ ! ઉસકા ‘ધ્યેય છોડકર શુભ કા આગ્રહ નહીં રખતા.’ કિ શુભ આયે તો મુજે હિત હોગા ઓર શુભભાવ સે મેરે આત્મા કા અનુભવ, દર્શન હોગા, એસા આગ્રહ નહીં રખતા. આહા..હા..! ‘તથા વહ મેં શુદ્ધ હું, મેં શુદ્ધ હું’ કરકે પર્યાય કી અશુદ્ધતા કો ભૂલ જાય—’ આહા..હા..! ત્રિકાલી શુદ્ધ હું. એસા હોને પર ભી પર્યાય મેં અશુદ્ધતા હે, વહ ભૂલ ન જાય.

‘સ્વચ્છંદ હો જાય...’ આહા..હા..! સમજ મેં આયા ? આહા..હા..! એસા માર્ગ હે. એસે ‘મેં શુદ્ધ હું, મેં શુદ્ધ હું’ કરકે પર્યાય કી અશુદ્ધતાકો ભૂલ જાય—સ્વચ્છંદ હો જાય એસા નહીં કરતા.’ આહા..હા..! અશુદ્ધતા હે તો કહાં હે ? મુજ મેં કહાં હે ? એસે અશુદ્ધતા કરતે હે ઓર પર્યાય મેં અશુદ્ધતા હે, વહ ઉસકો હે હી નહીં ઓર સ્વચ્છંદ હો જાય (એસા નહીં કરતા). આહા..હા..!

મુમુક્ષુ :- સ્વચ્છંદ માને કયા ?

પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી :- સ્વચ્છંદ નામ વિકારી પર્યાય મેરી નહીં હે, એસા માનકર વિકારી પર્યાય કા સેવન કરે, વહ સ્વચ્છંદ હે. આહા..હા..! સ્વચ્છંદ કા અર્થ તો સ્વતંત્રતા ભી હોતા હે. ‘સમયસાર’ મેં હે. વહ અર્થ યહાં નહીં. યહાં સ્વચ્છંદ કે અર્થ મેં, અપને સ્વભાવ કો ભૂલકર ઓર પર્યાય મેં અશુદ્ધતા હે ઉસકો લક્ષ્ય મેં ન રખકર અશુદ્ધતા કિતની ભી હો ઉસકા સેવન

કરે (એસા નહીં કરતા). આહા..હા..!

જ્ઞાની કા ભોગ નિર્જકા હેતુ હે, એસા કહા. તો વહ એસા માન લે કિ હમેં ભોગ હોતા હે... આહા..હા..! (ઉસમેં) નિર્જરા હોતી હે. એસા નહીં, પ્રભુ ! આહા..હા..! વિષય-વાસના કા ભાવ, ભોગ કા ભાવ સિર્ફ પાપ હે. યહાં તો શુભભાવ મેં હોનેપર ભી શુદ્ધતા કા ધ્યેય, શોધકપના ન જાયે. ઓર શુદ્ધતા ધ્યેય કરતા હે ઓર પર્યાય મેં અશુદ્ધતા હે હી નહીં, ચાહે જિતની ભી અશુદ્ધતા હો મુજે કયા હે ? એસે સ્વચ્છંદી ન હો જાય. આહા..હા..! એસા હે, ભાઈ !

‘શુષ્કજ્ઞાની નહીં હો જાતા...’ ‘શ્રીમદ્’ મેં આતા હે ન ? ‘કોઈ ક્રિયાજડ થઈ રહ્યા’ કોઈ રાગ કી ક્રિયામેં જડ મેં, રાગ જડ હે, ચૈતન્ય નહીં. ‘શુષ્કજ્ઞાનમાં કોઈ...’ સિર્ફ જ્ઞાન કે ઉઘાડ કી બાત કરે ઓર અંદર મેં સ્વચ્છંદ કા સેવન કરે... આહા..હા..! વહ નિશ્ચયાભાસી હે. આહા..હા..! કેસે ભી પાપ કે પરિણામ આવે, ઉસકી જિસકો દરકાર નહીં... આહા..હા..! વહ સ્વચ્છંદી હે. સ્વતંત્ર નહીં. આહા..હા..! પાપ હુઆ તો હુઆ, ભોગ હુઆ તો હુઆ, એસે બેદરકાર ન કરે. આહા..હા..! સમજ મેં આયા ? યહ તો ભાઈ ! જન્મ-મરણ રહિત હોને કી બાત હે. આહા..હા..! બાકી તો ઠીક, સબ કરતે હેં.

‘સ્વચ્છંદ હો જાય એસા નહીં કરતા; શુષ્કજ્ઞાની નહીં હો જાતા...’ જ્ઞાન કી બાર્તે કરના, લેકિન અંદર મેં રાગ કી એક્તા જરા ભી તોડે નહીં. આહા..હા..! સમજ મેં આયા ? વહ કહા ન કિ, ‘કોઈ ક્રિયાજડ થઈ રહ્યા.’ દયા, દાન, વ્રત, ભક્તિ, પૂજા સબ રાગ હે. ‘અને શુષ્કજ્ઞાનમાં કોઈ’ કિસી બાત મેં ચડ ગયે. શાસ્ત્ર કા અભ્યાસ કરકે, બાર્તો મેં આ ગયે. એસા હે, વૈસા હે. પાપ કે પરિણામ કિતને તીવ્ર આતે હેં ઉસકી દરકાર નહીં. આહા..હા..! વહ તો શુષ્કજ્ઞાની હે. કોરા જ્ઞાની-યથાર્થ જ્ઞાની-નહીં. આહા..હા..! ‘કરુણા ઊપજે જોઈ’ એસા ઉસમેં આતા હે ન ?

‘કોઈ ક્રિયા જડ થઈ રહ્યા, શુષ્કજ્ઞાનમાં કોઈ, માને

मार्ग मोक्षनो.' आडा..डा..! डम भी मोक्ष के मार्ग में हैं. अरे..! प्रभु ! आडा..डा..! पर से उदासीनता आयी नहीं... आडा..डा..! और स्वच्छंद से, मुझे अक लडका हुआ बहुत आनंद-आनंद (है). यह लडका कमाई करनेवाला हुआ तो आनंद-आनंद (हो जाये), क्या है यह स्वच्छंदता ? मेरा क्या है उसमें ? मैं तो शुद्ध हूँ न !

मुमुक्षु :- कमानेवाला बेटा हो तो पुत्र न हो ?

पूज्य गुरुदेवश्री :- किसका कमानेवाला बेटा ? ये 'भाई' कमानेवाले हुआ. छल डजार, आठ डजार का पगार. भात वह करते हैं. किसका बेटा ? आडा..डा..!

शुभराग भी अपना नहीं, वहां अशुभराग में जुडकर मुझे आनंद आता है. मैं तो शुद्ध हूँ. मैं कहां अशुद्ध में आया ? आडा..डा..! भाई ! अशुद्ध का सेवन करके नरक में जायेगा, बापू ! तिर्य्य में अवतार होगा. आडा..डा..! वहां कुदरत के नियम से विशुद्ध करेगा तो कुदरत नहीं छोड़ेगी. कठिन काम बहुत, भाई ! आडा..डा..!

'हृदय को भीगा हुआ रजता है.' देओ ! देओ ?

हृदय शुष्कज्ञानी नहीं हो जाता. भीगा हुआ, उदासीनता रजता है. आडा..डा..! २१५ बोल (पूरा) हुआ. मुमुक्षु की दशा की योग्यता यह कही. आडा..डा..!

जो वास्तव में संसार में थक गया है उसीको सम्यग्दर्शन प्रगट होता है. वस्तु की महिमा बराबर ज्वाल में आ जाने पर वह संसार से इतना अधिक थक जाता है कि 'मुझे कुछ भी नहीं चाहिए, अकनिज आत्मद्रव्य ही चाहिए' ऐसी दृढता करके बस 'द्रव्य सो ही मैं हूँ' जैसे भावस्वरूप परिष्कृत हो जाता है, अन्य सब निकाल देता है.

दृष्टि अक भी भेद को स्वीकार नहीं करती. शाश्वत द्रव्य पर स्थिर हुई दृष्टि यह देखने नहीं बैठती कि 'मुझे सम्यग्दर्शन या केवलज्ञान हुआ या नहीं.' उसे-द्रव्यदृष्टिवान श्रवको-जबर है कि अनंतकाल में अनंत श्रवोंने इस प्रकार द्रव्य पर दृष्टि जमाकर अनंत विभूति प्रगट की है. द्रव्यदृष्टि होने पर द्रव्य में जो-जो हो वह प्रगट होता ही है; तथापि 'मुझे सम्यग्दर्शन हुआ, मुझे अनुभूति हुई' इस प्रकार दृष्टि पर्याय में शिपकती नहीं है. वह तो प्रारंभ से पूर्णता तक, सबको निकालकर, द्रव्य पर ही जमी रहती है. किसी भी प्रकार की आशा बिना बिलकुल निस्पृहभाव से ही दृष्टि प्रगट होती है. २१६.

२१६. भाई ! यह तो सर्वज्ञ परमात्मा ने कहे पंथ की बात है. यह कोई कथा-वार्ता नहीं. भगवत्स्वरूप प्रभु ! उसको सम्यग्दर्शन में पाने की क्या रीत है, वह बात है.

मुमुक्षु :- ...

पूज्य गुरुदेवश्री :- भगवत्स्वरूप है, (लेकिन) प्रतीत में कहां आया है ? भगवत् स्वरूप है वह

तो ज्वाल में, भाषा में आया. आडा..डा..! भगवत् स्वरूप परमात्मा, उसकी उयाती प्रतीत में, ज्ञान में आती है, उसको भगवत्स्वरूप है. जिसको ज्ञान में राग और पर्याय भासित होती है, उसको अंदर भगवत् स्वरूप कहां है ? है तो है, लेकिन उसकी प्रतीत में कहां आया है ? समज में आया ? सुभल में आयेगा न ? आडा..डा..!

आत्मा की ज्ञान पर्याय में... आडा..डा..! भगवान पूर्णानंद स्वरूप का ज्ञान, अज्ञानी को भी होता है. आडा..डा..! क्या कहते हैं ? अज्ञानी की ज्ञान की पर्याय में भी बाल-गोपाल, बालक से वृद्ध छो, स्त्री छो, पुरुष छो, नपुसंक छो... आडा..डा..! उसका आत्मा... आडा..डा..! उसकी ज्ञानकी पर्याय में पर्याय का स्वपरप्रकाशक स्वभाव होने से पर्याय में भगवान ही भासता है. भगवान का ही ज्ञान पर्याय में होता है. आडा..डा..! लेकिन अज्ञानी राग और बंध के वश छोकर, परद्रव्य के वश छोकर, पर्याय में स्वद्रव्य भासता है, उसकी बेदरकारी करता है. आडा..डा..! समज में आया ? क्योंकि, ज्ञान की पर्याय जो है, उस पर्याय का स्वभाव तो स्वपरप्रकाशक है. तो स्वप्रकाशक ज्ञान की पर्याय में सारा भगवान पूर्णानंद, उसका पर्याय में ज्ञान होता है. आडा..डा..! अज्ञानी की पर्याय में भी स्वद्रव्य का ज्ञान तो होता ही है. लेकिन राग और बंध के वश दृष्टि होने से, अबंध भगवान पर्याय में जानने में आने पर भी, वह जानता नहीं. आडा..डा..! समज में आया ? क्या कडा ? आयेगा कल, परसों.

‘जो वास्तव में संसार से थक गया है उसीको सम्यग्दर्शन प्रगट होता है.’ आडा..डा..! पर्याय में भगवान पूर्णानंद भासता है, फिर भी उसकी दृष्टि पर्याय और राग पर होने से, उसको भासित होनेपर भी उसे नहीं भासित हो गया. आडा..डा..! समज में आया ? दृष्टि में सिर्फ परप्रकाशक रह गया. परप्रकाश में स्वप्रकाशक जानने में आया वह रडा नहीं. आडा..डा..! पर्याय को और शुभ-अशुभराग को जानने में स्वपरप्रकाशक न आया. स्वप्रकाशक न आया, अकेला परप्रकाश आया. जानते हैं, पर्याय स्व और परप्रकाशक ऐसा पर्याय के स्वभाव में है. आडा..डा..! फिर भी स्व की ओर का लक्ष्य नहीं, उस कारण से अकेली परप्रकाशक पर्याय में अपने को मानता है. आडा..डा..! वह मिथ्यात्व है. आडा..डा..! गजब बात है. ऐसी बात !

द्विगंबर संत, केवलज्ञानी के केडायत है, प्रभु ! वे सर्वज्ञ के केडायत हैं. सर्वज्ञपना अल्पकाल में पानेवाले हैं. आडा..डा..! सर्वज्ञ की वाणी अनुसार अंतर में अनुभव हुआ, तो वह जगत को जाहिर करते हैं. आडा..डा..! कि अपनी पर्याय में तेरी यीज तो जानने में आती है, लेकिन तेरा लक्ष्य राग और पर्याय पर होने से, परद्रव्य पर तेरा लक्ष्य होने से, स्वद्रव्य तेरे ज्ञान में जानने में आता है, फिर भी जाना नहीं. आडा..डा..! ऐसी बातें. इसके बजाय दया पालना, व्रत करना, शमो अरिहंताशं, ध्यामि पडिकमशा... तस्स मिथ्यामि दुक्कडमं... (आसान था). एक जगह से दूसरी जगह जव को रखा हो तो मिथ्यामि दुक्कडम. वहां कहां धर्म आया ? आडा..डा..! ... श्वेतांबर में आता है न ? ... करणामी. मिथ्यात्व आदि सब से रहित छोकर मैं काउसग्ग करता हूं. आडा..डा..! लेकिन मिथ्यात्व क्या ? उससे रहितपना क्या है ? वह मादूम नहीं. समज में आया ? और लोगस्स में ऐसा बोले कि ‘सिद्धासिद्धि मम दिसंतु.’ हे सिद्धभगवान ! मुझे सिद्धपना दिभाईये. आडा..डा..! क्या है यह ? आडा..डा..! तुमने सब किया था कि नहीं ? किया था ! आडा..डा..! डमनें भी सब दुकान पर किया था. शाम को प्रतिकमश करते थे. संवत्सरी आती है न ? स्थानकवासी के पर्युषण. अपवास करते थे. आठ दिन में चार योविहारे उपवास करते थे. पानी नहीं, पानी का बुंद नहीं (लेते थे). योवीहार. और शाम को प्रतिकमश. सामायिक करके मैं प्रतिकमश करवाता था. (संवत्) १८६५-६६ की बात है. लेकिन कुछ भान नहीं. यह किया धर्म है, मैंने धर्म किया, यह प्रतिकमश किया. आडा..डा..! बादमें कुछ गाना बोले ‘जुओ जुओ रे जैनो केवा व्रतधारी’ व्रतधारी. ‘जंबुस्वामी’ का ऐसा भजन आता है. दुकान पर निवृत्ति थी. कुछ भान नहीं. आडा..डा..! अरे...! प्रभु ! कौन है और यह बोलते हैं वह भाषा किसकी है ? और विकल्प आये वह क्या यीज है ? आडा..डा..!

યહાં કહતે હૈં, 'સંસાર સે થક ગયા હૈ...' આહા..હા..! ચૌરાસી લાખ યોની મેં અવતાર કરકે પ્રભુ તેરા અનંતકાલ ગયા. આહા..હા..! ફિર ભી તુજે થકાન નહીં લગી. આહા..હા..! તિર્યચ કે ભવ, નિગોદ કે ભવ, એક શ્વાસ મેં નિગોદ કે અઠારહ ભવ. આહા..હા..! વહ કેસે ભવ હોંગે ? આહા..હા..! ઉસે રાગ કા, ભવ કા કિતના પ્રેમ હોગા ! આહા..હા..! સ્ત્રી હોતી હૈ ન. આઠ-દસ જાત કી સાડી રખે. આઠ-દસ જાતિ કી. રસોઈઘર મેં અલગ સાડી, જંગલ જાયે તો અલગ સાડી, કોઈ મર ગયા હો વહાં જાને કે લિયે દૂસરી સાડી. કપડે બહુત બદલે. છોટી ઉમ્ર મેં સબ દેખા હૈ. બદલતે હી રહે. 'ભાવનગર' કે બડે દરબાર કે પાસ બહુત જૂતે થે. મર ગયે તબ તીન હજાર જૂતે નીકલે. અલગ-અલગ, બૈઠને કે લિયે, સોને કે લિયે સબ અલગ અલગ. ફેરફાર.. ફેરફાર.. કપડે ભી બદલતે રહે. વૈસે અનાદિ સે અજ્ઞાની ભવ કો ઘૂમાતા રહતા હૈ. આહા..હા..! અર..ર...! અબ તુજે થકાન લગી હો તો... આહા..હા..! તુજે થકાન લગી હો તો, કહતે હૈં. આહા..હા..!

'ઉસીકો સમ્યગ્દર્શન પ્રગટ હોતા હૈ.' બાહર સે સમેટકર અંદર મેં જાના. આહા..હા..! ભગવાન પૂર્ણાનંદ કા નાથ જહાં બિરાજતે હૈં, વહાં દષ્ટિ લે જાના ઔર ઉસકા અનુભવ કરના. આહા..હા..! તબ સંસાર કી થકાન ઉતર જાયેગી. ભવ કા અંત આયેગા. આહા..હા..! સમજ મેં આયા ? ઉસકે સિવા ચાહે દયા, દાન, વ્રત, ભક્તિ કે ભાવ કિયે, વહ સબ સંસાર હૈ. આહા..હા..! સમજ મેં આયા ?

'વસ્તુ કી મહિમા બરાબર ખ્યાલ મેં આ જાને પર વહ સંસાર સે ઇતના અધિક થક જાતા હૈ...' આહા..હા..! ભગવાન આત્મા અનંત અપરિમિત શક્તિ કા-ગુણ કા- ભંડાર, સ્વભાવ કા ભગવાન ભંડાર, અપરિમિત સ્વભાવ, બાપૂ ! આહા..હા..! પર્યાય મેં ઇસકી જિસકો મહિમા આતી હૈ... આહા..હા..! ભગવાન અંદર નીચે તલ મેં કિતની શક્તિ રખતા હૈ ! ધ્રુવ મેં અનંત અપરિમિત શક્તિ હૈ. આહા..હા..! ઔર વહ

ભી નિત્ય. આહા..હા..!

'સંસાર સે ઇતના અધિક થક જાતા હૈ કિ 'મુજે કુછ ભી નહીં ચાહિયે,'...' આહા..હા..! મેરે ભગવાન પૂર્ણાનંદ કે નાથ કે સિવા મુજે કુછ નહીં ચાહિયે. આહા..હા..! દુનિયા પ્રશંસા કરે, નિંદા કરે વહ તો જગત કી ચીજ હૈ. મુજે ક્યા ? આહા..હા..! સમજ મેં આયા ? 'ઇતના અધિક થક જાતા હૈ કિ 'મુજે કુછ ભી નહીં ચાહિયે, એક નિજ આત્મદ્રવ્ય હી ચાહિયે,'...' આહા..હા..! ભગવાન આત્મા પૂર્ણાનંદ સ્વરૂપ જો દ્રવ્ય સ્વભાવ, વહ એક હી ચાહિયે. વસ્તુ ત્રિકાલી જ્ઞાયકભાવ, અનંતગુણ કા સાગર પ્રભુ ! આહા..હા..! વહ એક હી ચાહિયે.

'ઐસી દઢતા કરકે...' 'એક નિજ આત્મદ્રવ્ય હી ચાહિયે ઐસી દઢતા કરકે બસ 'દ્રવ્ય સો હી મૈં હું.'...' આહા..હા..! પરવસ્તુ તો મૈં નહીં, દયા-દાન કા વિકલ્પ ભી મૈં નહીં, એક પર્યાય ભી મૈં નહીં... આહા..હા..! વૈસે એક ગુણરૂપ ભી નહીં. અનંત ગુણ કા સાગર એક દ્રવ્ય ભગવાન... આહા..હા..! 'સો હી મૈં હું. ઐસે ભાવરૂપ પરિણમિત હો જાતા હૈ...' ઐસે પર્યાય મેં નિર્મલ સમ્યગ્દર્શન કી પર્યાયરૂપ પરિણમિત હો જાતા હૈ. આહા..હા..! સમજ મેં આયા ?

'ઐસે ભાવરૂપ...' મૈં શુદ્ધ દ્રવ્ય એકરૂપ હું, વહી મુજે ચાહિયે, ઐસી દઢતા કરકે 'ભાવરૂપ પરિણમિત હો જાતા હૈ, અન્ય સબ નિકાલ દેતા હૈ.' આહા..હા..! ચાહે તો શુભરાગ હો, ઉસકો ભી છોડ દેતા હૈ. વહ મુજે નહીં ચાહિયે. એક સમય કી પર્યાય મેં ક્ષયોપશમ જ્ઞાન હો, વહ ભી મુજે નહીં ચાહિયે. મુજે તો પૂર્ણ જ્ઞાયકભાવ દ્રવ્યસ્વભાવ એક હી ચાહિયે. 'અન્ય સબ નિકાલ દેતા હૈ.' પર્યાય ભી અપના આશ્રય છોડ દેતી હૈ. પર્યાય કા આશ્રય છોડ દેતે હૈ, રાગ કા આશ્રય છોડ દેતે હૈ. સિર્ફ ત્રિકાલ જ્ઞાયકભાવ... આહા..હા..! તબ ઉસકો સમ્યગ્દર્શન હોતા હૈ. આહા..હા..!

યહાં તો ભગવાન કી ભક્તિ કરો, સ્મરણ કરો, જાપ કરો, ભગવાન કા ધ્યાન કરો, તુમકો આત્મા પ્રાપ્ત હો જાયેગા. અરે...! ભાઈ ! ઉસ વિકલ્પ મેં કહાં આત્મા

है ? विकल्प में तो अनात्मा है. आडा..डा..! विकल्प से पार भगवान निर्विकल्प रीज, उसकी प्राप्ति में तो उस ओर की दृष्टि हो और राग और पर्यायबुद्धि छूट जाये. आडा..डा..! शास्त्र की पूजा करने से मेरा कल्याण होगा ऐसी दृष्टि छूट जाये. शास्त्र की पूजा करना वह भी एक शुभभाव राग है. आडा..डा..! जिसने यह वाणी पूज्य कही है, दूसरे श्लोक में, लेकिन वह व्यवहार से पूज्य है. आडा..डा..! समज में आया ? शास्त्र देखे, पन्ना पडा हो, जय भगवान. भगवान की प्रतिमा तो शास्त्र से भी विशेष है. उसमें तो प्रतिबिंब में शांत... शांत... शांत... आडा..डा..! द्विभती है. वीतराग... उलयल नहीं, स्थिरबिंब द्विभे. आडा..डा..! फिर भी वह शुभभाव है. समज में आया ? उसे निकाल देते हैं. दृष्टि में वह मेरा नहीं (ऐसे निकाल देता है). आडा..डा..!

‘दृष्टि एक भी भेद को स्वीकार नहीं करती.’ आडा..डा..! क्या कहते हैं ? सम्यग्दृष्टि जो दृष्टि है, वह निमित्त को स्वीकार नहीं करती, राग को स्वीकार नहीं करती, पर्याय को स्वीकार नहीं करती. आडा..डा..! ‘भेद को स्वीकार नहीं करती.’ गुण-गुणी का भेद भी दृष्टि स्वीकार नहीं करती. आडा..डा..! भगवान पूर्णानंद का नाथ अभेद वस्तु, दृष्टि उस अभेद को स्वीकार करती है. आडा..डा..! तो शुभराग आता है उसका स्वीकार करे और उससे लाभ होगा, वह मिथ्यादर्शन है. आडा..डा..! ऐसी बातें हैं, भाई ! आडा..डा..! वर्तमान में तो देखो न ! डाईईईल. क्या कहते हैं ? हृदय का रोग. कितनों को सुनते हैं. युवान को हृदय का रोग है. लेकिन हृदय का रोग तुजे हुआ है ? राग के प्रेम में तेरा डाईईईल हो गया है. आडा..डा..!

‘दृष्टि एक भी भेद को स्वीकार नहीं करती.’ आडा..डा..! ‘शाश्वत द्रव्य पर स्थिर छुई दृष्टि यह देखने नहीं बैठती...’ आडा..डा..! त्रिकाली वस्तु सामान्य पर दृष्टि (छुई), वह दृष्टि जैसे स्वीकार नहीं करती कि ‘भुजे सम्यग्दर्शन या केवलज्ञान हुआ या नहीं.’

आडा..डा..! क्योंकि सम्यग्दर्शन और केवलज्ञान तो पर्याय है. आडा..डा..! ऐसी बात है, प्रभु ! कठिन पडे इसलिये लोग ‘सोनगढ’ के नाम पर बेचारे विरोध करते हैं. अरे..! प्रभु ! क्या करता है ? भाई ! तुम्हारे स्वरूप की प्राप्ति की बात है न. तु किसका विरोध करता है ? भाई ! आडा..डा..! यह सब व्यवहार से होता है, व्यवहार से होता है, ऐसा तो कहते नहीं. उसका तो लोप कर देते हैं. यहां तो भेददृष्टि का भी स्वीकार नहीं. आडा..डा..! दया, दान, व्रत, तप व्यवहार क्रिया की तो क्या बात करना ? लेकिन गुण-गुणी का भेद भी दृष्टि का विषय नहीं. आडा..डा..! ऐसा है, प्रभु !

जिसके ध्येय में, दृष्टि में तो सिई अभेद द्रव्य द्विभता है. द्विभता है अर्थात् श्रद्धा होता है, प्रतीत में आता है और जानने में आता है. आडा..डा..! शास्त्र का दृष्टांत दे कि देखो ! उसमें ऐसा कडा है न ? उसमें ऐसा कडा है. ‘पंचास्तिकाय’ में भिन्न साध्य-साधन कडा है न. भगवान ! वह किस अपेक्षा से कडा है ? भाई ! वह तो निमित्त कैसा था उसका ज्ञान करवाया है. लेकिन उससे कोई निश्चय होता है, ऐसा है नहीं. अरे..रे..! शास्त्र के अर्थमें से अपनी दृष्टि को पोषण मिले ऐसा अर्थ करे, लेकिन वस्तुदृष्टि का पोषण कैसे हो, वह मादूम नहीं. अरे..रे..!

‘दृष्टि एक भी भेद को स्वीकार नहीं करती.’ आडा..डा..! ‘द्रव्यदृष्टि प्रकाश’ आता है कि नहीं ? ‘सोगानी’! मिला है न ? ‘द्रव्यदृष्टिप्रकाश’ मिला है न ? भाई ! समज में आया ? आडा..डा..! उससे भी यह पुस्तक अलौकिक है. आडा..डा..! सम्यग्दृष्टि ‘दृष्टि एक भी भेद को स्वीकार नहीं करती.’ राग नहीं, निमित्त भगवान है उसका तो अपने में स्वीकार नहीं, वह तो पर में है. राग भी अपने में नहीं, वह तो परद्रव्य है. अरे..! निश्चय से तो पर्याय भी परद्रव्य है. आडा..डा..! वैसे दृष्टि द्रव्य का स्वीकार करने में, पर्याय भी परद्रव्य है (ऐसा मानती है).

પર્યાય ભેદ હૈ ન, ત્રિકાલી દ્રવ્ય કા ભેદ હૈ. આહા..હા..! ફિર ભી ઉસકે લક્ષ્ય મેં, પર્યાય હૈ, અશુદ્ધતા હૈ, વહ લક્ષ્ય તો હોના ચાહિયે. આહા..હા..! વહ 'સમયસાર' કી ૧૪ વીં ગાથા મેં આયા હૈ. આહા..હા..! ભૂલ જાયે કિ પર્યાય મેં અશુદ્ધતા હૈ હી નહીં તો ટાલના કિસકો ? આત્મા કા આશ્રય લેકર અસ્થિરતા ટલે વહ કહાં રહા ? નહીં હૈ તો ટાલના કહાં રહા ? આહા..હા..!

‘દ્રવ્ય પર સ્થિર હુઈ દષ્ટિ યહ દેખને નહીં બૈઠતી..’ આહા..હા..! ‘કિ મુજે સમ્યગ્દર્શન યા કેવલજ્ઞાન હુઆ યા નહીં.’ વહ તો પર્યાય હૈ. દષ્ટિ કે વિષય મેં સમ્યગ્દર્શન કી પર્યાય ભી સમ્યગ્દર્શન કા વિષય નહીં. આહા..હા..! નિર્વિકલ્પ સમ્યગ્દર્શન ઉસકા વિષય નહીં. આહા..હા..! તો ઉસકા વિષય શાસ્ત્ર, પ્રતિમા ઓર મંદિર (હો ઐસા કેસે હો સકતા હૈ ?) આહા..હા..! ‘આફ્રિકા’વાલે પન્દ્રહ લાખ કા મંદિર બના રહે હૈં ન ? ‘નાઈરોબી’. દો હજાર સાલ મેં નયા બન રહા હૈ. પરદેશ મેં યહ પહલા મંદિર હૈ. વહાં મુમુક્ષુ કે સાંઠ ઘર હૈ. સાત-આઠ ઘર તો કરોડપતિ હૈં. દૂસરે તો ૧૫-૨૦-૨૫ લાખવાલે બહુત હૈં. સબ શ્વેતાંબર કે લક્ષ્ય મેં આયા હૈ કિ માર્ગ તો યહ હૈ. સમજ મેં આયા ? ક્યા હોગા ? કેસે હોગા ? ‘જે જે દેખી વીતરાગને, તે તે હોસી વીરા.’ આહા..હા..! ‘અનહોની કબહુ ન હોસે, કાહેત હોત અધીરા.’ આહા..હા..! ઉસકી ભી દષ્ટિ કહાં હૈ ? આહા..હા..! દ્રવ્ય પર દષ્ટિ હોની ચાહિયે. આહા..હા..! પર્યાય હોગી... હોગી ઉસ પર ભી દષ્ટિ નહીં, ઐસા કહતે હૈં. ઓર પર્યાય હુઈ ઉસ પર ભી દષ્ટિ નહીં હુઈ. સમ્યગ્દર્શન હુઆ ઓર કેવલજ્ઞાન તો હુઆ નહીં.

‘સમ્યગ્દર્શન યા કેવલજ્ઞાન હુઆ યા નહીં. ઉસે— દ્રવ્યદષ્ટિવાન જીવકો-ખબર હૈ કિ અનંતકાલ મેં અનંત જીવો ને ઈસ પ્રકાર દ્રવ્ય પર દષ્ટિ જમાકર..’ વસ્તુ પર દષ્ટિ જમાકર... આહા..હા..! ‘અનંત વિભૂતિ પ્રગટ કી હૈ.’ આહા..હા..! અંદર મેં અનંત-અનંત સંપદા... આનંદ, જ્ઞાન ઓર શાંતિ કી સંપદા અનંત પડી હૈ,

દ્રવ્યદષ્ટિ લગાકર સંપદા કી વિભૂતિ પર્યાય મેં પ્રગટ કી હૈ. આહા..હા..! યહ વિભૂતિ હૈ. યે ધૈસે-બૈસે ધૂલ હૈ. વહ તો સ્મશાન કી હંકી કી ફાસફૂસ હૈ. આહા..હા..! સમજ મેં આયા ?

મુમુક્ષુ :- પૂરી દુનિયા ધૈસે કે પીછે પાગલ હૈ.

પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી :- પાગલ હૈ, સારી દુનિયા પાગલ હૈ. દસ હજાર, પંદ્રહ હજાર, બીસ હજાર કા પગાર હુઆ તો.. આ..હા..હા..! ક્યા હૈ લેકિન ? ‘ધૈસો મારો પરમેશ્વર ને હું ધૈસાનો દાસ’ મિથ્યાદષ્ટિ હૈ. આહા..હા..! યહાં તો પર્યાય મેં સમ્યગ્દર્શન પ્રગટ હુઆ, ઉસકો ભી દષ્ટિ સ્વીકાર નહીં કરતી. ઉસકી દષ્ટિ કા જોર તો ત્રિકાલી જ્ઞાયક પર હૈ. આહા..હા..! ઐસી બાત હૈ.

‘અનંત કાલ મેં અનંત જીવોને....’ ‘દ્રવ્યદષ્ટિ હોને પર દ્રવ્ય મેં જો-જો હો...’ દ્રવ્ય નામ વસ્તુ જો અખંડ-અભેદ (હૈ), ઐસી દષ્ટિ હોને સે, ઉસ અભેદ મેં જો હૈ, વહ પ્રગટ હોતા હૈ. હૈ ઉસમેં સે, સત્યમેં સે સત્ય આતા હૈ. આહા..હા..! નિર્મલ સમ્યગ્દર્શન, નિર્મલ જ્ઞાન, નિર્મલ શાંતિ, નિર્મલ આનંદ, ઐસી વિભુતિ વસ્તુ મેં હૈ, તો ઉસકા અનુભવ પ્રતીત કરને સે સમ્યગ્દર્શન મેં વહ વિભુતિ (પ્રગટ) હો જાતી હૈ. આહા..હા..!

‘દ્રવ્ય મેં જો-જો હો વહ પ્રગટ હોતા હી હૈ;...’ હોતા હી હૈ. ઐસી બાતે, ભાઈ ! યહ તો જિસકો જન્મ-મરણ રહિત હોના હૈ, ઉસકી બાત હૈ. બાકી બાહર મેં રાજી-રાજી (હોના હો, ઉસકે લિયે નહીં હૈ). આહા..હા..! ‘પ્રવચનસાર’ ‘અમૃતચંદ્રાચાર્ય’ મેં તો વહાં તક આતા હૈ કિ હમેં ક્ષયોપશમજ્ઞાન કી ભી જરૂરત નહીં હૈ. હમેં તો ભગવાન હૈં વહાં જાના, લીન હોના, યહ એક હી બાત હૈ. આહા..હા..! ક્ષયોપશમ સે ભી બસ હો, અલમ. સમજ મેં આયા ?

‘દ્રવ્યદષ્ટિ હોને પર દ્રવ્ય મેં જો-જો હો વહ પ્રગટ હોતા હી હૈ; તથાપિ ‘મુજે સમ્યગ્દર્શન હુઆ, મુજે અનુભૂતિ હુઈ’ ઈસ પ્રકાર દષ્ટિ પર્યાય મેં ચિપકતી નહીં હૈ.’ પર્યાય મેં ચોંટતી નહીં. આહા..હા..! સમજ

મેં આયા ? દષ્ટિ તો ભગવાન પૂર્ણાનંદ પ્રભુ પર પડી છે, વહ પર્યાય પ્રગટ હુઈ ઉસમેં ચિપકતી નહીં, અટકતી નહીં, રુકતી નહીં. આહા..હા..! સમ્યગ્દર્શન કા વિષય, અભેદ પૂર્ણાનંદ કા નાથ દષ્ટિ કે વિષયમેં સે હટતા નહીં. આહા..હા..! મધ્યસ્થી જો બરાબર સુને તો ઉસકો ખ્યાલ આયે કિ વસ્તુ તો યહ હૈ, સત્ય તો યહ હૈ. આહા..હા..! ભલે ઉસે એકાંત લગે ઔર કઠિન લગે. અનંતકાલ મેં ક્રિયા નહીં ન, ભાઈ ! અનંતકાલ સે ક્રિયા નહીં. આહા..હા..! દ્રવ્ય પર દષ્ટિ દેના, યહ ચીજ ક્યા હૈ ? દષ્ટિ ક્યા ઔર દ્રવ્ય પર દેના (ક્યા) ? આહા..હા..! ઔર દષ્ટિ પ્રગટ હુઈ ફિર ભી દષ્ટિ ઉસ પર જોર નહીં દેતી કિ મુજે સમ્યગ્દર્શન તો હુઆ. આહા..હા..! તો લૌકિક શાસ્ત્રજ્ઞાન હુઆ ઉસકી તો બાત કહાં હૈ ? શાસ્ત્ર કે અભ્યાસ કા અભિમાન, મુજે જ્ઞાન હુઆ... આહા..હા..! સમજ મેં આયા ?

‘ઇસ પ્રકાર દષ્ટિ પર્યાય મેં ચિપકતી નહીં હૈ.’ આહા..હા..! ‘યહ તો પ્રારમ્ભ સે પૂર્ણતા તક,...’ સમ્યગ્દર્શન ઔર દષ્ટિ ‘યહ તો પ્રારમ્ભ સે પૂર્ણતા

તક, સબકો નિકાલ કર,...’ આહા..હા..! ‘દ્રવ્ય પર હી જમી રહતી હૈ.’ સમજ મેં આયા ? આહા..હા..! દ્રવ્ય અર્થાત્ વસ્તુ ત્રિકાલી જ્ઞાયક પ્રભુ ! અનંત-અનંત સંપદા કા ઘર, મહલ, ઉસમેં જહાં દષ્ટિ ગઈ... આહા..હા..! વહ શુરૂઆત સે આખિર તક વહીં જમી રહતી હૈ. આહા..હા..! ‘કિસી ભી પ્રકાર કી આશા બિના...’ આહા..હા..! મુજે લોગ જાને, મુજે જાને કી ઇસે સમ્યગ્દર્શન હુઆ હૈ, યે સબ આશાએં... આહા..હા..! સમજ મેં આયા ? ઢિઢેરા પીટના કિ મેંને ઇતના પ્રાપ્ત ક્રિયા. દષ્ટિ કે વિષયવાલે કો એસી ચીજ હોતી નહીં. આહા..હા..! ‘કિસી ભી પ્રકાર કી આશા બિના...’ દુનિયા માને, દુનિયા મુજે પહિચાને, દૂસરે સે બેહતર મેંને ધર્મ પ્રાપ્ત ક્રિયા હૈ એસા જાને... આહા..હા..! એસી કિસી ભી પ્રકાર કી આશા બિના, ‘બિલકુલ નિસ્પૃહભાવ સે હી દષ્ટિ પ્રગટ હોતી હૈ.’ ત્રિકાલી વસ્તુ કી દષ્ટિ નિસ્પૃહભાવ સે પ્રગટ હોતી હૈ, પર કી કોઈ આશા બિના. આહા..હા..! ૨૧૬ બોલ (પૂરા) હુઆ.

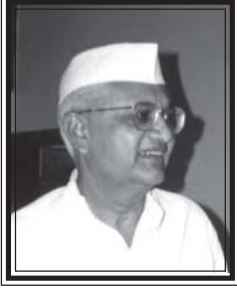
કરુણાસાગર ‘પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈ’ની ૭૯મી જન્મ જયંતી પ્રસંગે ધાર્મિક કાર્યક્રમ

મુમુક્ષુજીવોના પરમ તારણહાર ‘પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈ’ની આગામી ૭૯મી જન્મ જયંતી માગશર સુદ-૪, તા. ૨૯-૧૧-૧૧ થી માગશર સુદ-૮, તા. ૩-૧૨-૧૧ પર્યંત અત્યંત આનંદોલ્લાસપૂર્વક ઉજવવામાં આવશે. આ પ્રસંગે મંડલ વિધાન પૂજન, પૂજ્ય ભાઈશ્રીનાં ઓડિયો તથા વિડીયો સી.ડી. પ્રવચન, પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રીનાં વિડીયો સી.ડી. પ્રવચન, પૂજ્ય બહેનશ્રી ચંપાબહેનની વિડીયો સી.ડી. તત્ત્વચર્યા, ભક્તિ, સત્સંગ, સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમ રાખવામાં આવશે. તથા તા. ૨-૧૨-૧૧ના દિવસે જિનેન્દ્ર રથયાત્રાનો કાર્યક્રમ રાખવામાં આવશે.

આ પ્રસંગે આવનાર મુમુક્ષુએ ટ્રસ્ટના કાર્યાલયમાં અગાઉથી સૂચના આપવા વિનંતી છે જેથી તેમના આવાસ તથા ભોજનની સમુચિત વ્યવસ્થા થઈ શકે.

કાર્યક્રમ સ્થળ :- ‘શ્રી શશીપ્રભુ સાધના-સ્મૃતિ મંદિર’ પ્લોટ નં. ૧૯૪૨-બી, શશીપ્રભુ ચોક, રૂપાણી સર્કલ પાસે, ભાવનગર-૩૬૪૦૦૧

સંપર્ક : શ્રી સત્શ્રુત પ્રભાવના ટ્રસ્ટ, ૫૮૦, જૂની માણેકવાડી, પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી કાનજીસ્વામી માર્ગ, ભાવનગર-૩૬૪૦૦૧,



શ્રી પરમાગમસાર, વચનામૃત-૧૨૯ ઉપર
પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈનું પ્રવચન,
પ્રવચન નં. ૩૭ (તા.૮-૧૨-૧૯૮૨, ભાવનગર)

અરે ભાઈ ! તારા જેવું કોઈ ધનાઢ્ય નથી ! તારી અંદરમાં પરમાત્મા બિરાજે છે એથી વિશેષ ધનાઢ્યપણું શું હોઈ શકે ? આવું પરમાત્માપણું સાંભળતાં એને અંદરથી ઉલ્લાસ ઊછળવો જોઈએ. એની લગની લાગવી જોઈએ. એને માટે ગાંડા થવું જોઈએ. આવા પરમાત્મસ્વરૂપની ધૂન લાગવી જોઈએ. સારી ધૂન લાગે તો જે સ્વરૂપ અંદરમાં છે તે પ્રગટ થયા વિના કેમ રહે ? જરૂર પ્રગટ થાય જ. ૧૨૯.

૧૨૯. 'અરે ભાઈ ! તારા જેવું કોઈ ધનાઢ્ય નથી !' ભાઈ ! તારા જેવું કોઈ ધનાઢ્ય નથી. તું પામર... પામર... પામર... કરે છો, મારી પાસે ક્યાં પૈસા છે ? પૈસાવાળાને દેખતા તને એમ થાય છે કે અરે...રે...! તે ઊંચા અને હું નીચો. પણ ભગવાન કહે છે કે, 'તારા જેવું કોઈ ધનાઢ્ય નથી !' એ જે લઘુતાગ્રંથી છે એ છોડ એમ કહે છે. Inferiority of complex કહે છે. અરે ! હું તો સાવ સાધારણ... અરે ! હું તો સાવ સાધારણ. એ લઘુતાગ્રંથી તો આડશ છે. તારા સ્વરૂપનું દર્શન કરવામાં એ અંતરાય છે. એ લઘુતાગ્રંથી સેવવા જેવી નથી, એમ કહે છે.

'ભાઈ ! તારા જેવું કોઈ ધનાઢ્ય નથી ! તારી અંદરમાં પરમાત્મા બિરાજે છે એથી વિશેષ ધનાઢ્યપણું શું હોઈ શકે ?' અનંત દિવ્ય ગુણોની સંપત્તિથી તું સંપન્ન છો. તારી જે ગુણસંપત્તિ છે એની પાસે બહારના ધનના ઢગલા ધૂડના ઢગલા દેખવામાં આવે છે. 'ગુરુદેવ'નો બહુ પ્રચંડ રણકાર હતો એ. ઘણા શ્રીમંત માણસો વ્યાખ્યાનમાં આવતા. ભાવનગરના મહારાજ આવેલા. નજીક બોલાવીને ધોકા મારે. માખણ મારવાની તો પરિસ્થિતિ ક્યારેય જોઈ નથી. અને ચોખ્ખું કહે, અહીંયાં ક્યાં અમારી પાસે માખણપટ્ટી કરવાની વાત

છે. અને અમારે કાંઈ જાળો લેવાનો નથી, કે ભાઈ ! નોંધાવજો. એવી વાત તો અમારે છે નહિ.

મુમુક્ષુ :- ભિખારા કહે.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- ભિખારા કહે. આ ધૂડ છે એમ કહે. આ ધૂડ છે અને તમે એ ધૂડના માગનારા ભિખારા છો એમ કહે. અને પછી એકાદ શેઠિયાનું નામ લે. ફલાણાભાઈ ! આમ વાત છે.

મુમુક્ષુ :- ઝાઝું માગે ઇ મોટો માંગણ, થોડું માંગે ઇ (નાનો) માંગણ.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- એવી સિંહવૃત્તિ હોય છે. સાધકોની સિંહવૃત્તિ હોય છે. એમાં પણ વળી 'ગુરુદેવ' તો તીર્થંકરદ્રવ્ય છે. તીર્થંકર પ્રકૃતિ હજી અહીંયાં બાંધી નથી કે બાંધતા નહોતા પણ એ તીર્થંકરપ્રકૃતિ બાંધવાની પહેલા જે Process છે. એ તીર્થંકરત્વ જ ઘૂંટાતું હતું. એને શું કહેવાય છે ? તીર્થંકરત્વ ઘૂંટાતું હતું. એટલે એ તો સિંહવૃત્તિમાં હતા. આ ટ્રસ્ટીઓ શું કરે છે ? અને શું ચાલે છે ? કોઈ દિ' પૂછવાની દરકાર કરી નથી કે તમારે કાંઈ શું ભેગું થયું ? અને કોઈ મંદિર, દેરાસર ચણાવવા માટે માગે તો નિષેધ કરે, આ શું ? માગણ વૃત્તિ ? તમારામાં ધનની અર્પણતા કરવાની લોભવૃત્તિ ઘટી હોય તો ભગવાનનું મંદિર બાંધો.

શુભાયતન છે. પણ લોભ તમારો એમને એમ હોય અને બીજે માગવા જવું, તમે મંદિર બાંધવાને લાયક નથી. મંદિર કરીને ભગવાનના દર્શનનો યોગ તો તમારે છે કે બીજા કોઈને છે ? તો એ તો તમે તમારો લોભ ઘટાડીને, અશુભ ઘટાડીને એટલા શુભમાં આવો. બીજાની પાસે માગવાનો શું સવાલ છે એમાં ? સીધો ન્યાય છે. એટલે એ કોઈ એવી પરિસ્થિતિ ઊભી થાય તો પણ, ના પાડી દે. બિલકુલ નહિ. આ પદ્ધતિ ન હોય, એમ કહી દે.

અહીંયાં તો કહે છે કે, 'ભાઈ ! તારા જેવું કોઈ ધનાઢ્ય નથી !' તને ખબર નથી કે તારી અંદરમાં દાટેલા ધનની જેમ તારા ગુણની સંપત્તિ રહી છે એની તને ખબર નથી. તારી અંદરમાં તો સાક્ષાત્ પરમાત્મા બિરાજે છે, પ્રગટ પરમાત્મા બિરાજે છે એમ કહે છે. 'એથી વિશેષ ધનાઢ્યપણું શું હોઈ શકે ?' એનાથી વધારે દુનિયામાં બીજું કોઈ ધન નથી. જેને ધન કહે છે એને તો ધૂડ કહે છે.

આ વખતે આપણે હિન્દી આત્મધર્મમાં એક વાત નાખી છે. અહીંયાં હજી નથી આવ્યું લાગતું. આ વખતનું છેલ્લું. એમાં એમ લખ્યું છે કે, મુનિઓ એમ કહે છે કે અમને જગતના જીવોનો સંગ રુચતો નથી. જગતના જીવોનો અમને સંગ રુચતો નથી. લીધું છે તો કોઈ જ્ઞાનીના વચનમાં, સત્પુરુષના વચનામૃતમાં એ વાત આવી છે. 'ધ્યાનતરાયજી' કે કોઈનામાંથી લીધું છે. અને પૈસાવાળાનો સંગ તો અમને અતિ દુઃખદાયક લાગે છે. અને રાજાઓનો સંગ તો અમને મરણતુલ્ય લાગે છે. લોકો એમ કહે કે આ પૈસાવાળા છે અને આપણે સંબંધ હોય તો સારું...

'બહેનશ્રી'નો દષ્ટાંત લીધો હતો. અઢાર વર્ષે સમ્યગ્દર્શનની શુદ્ધદશાને પ્રાપ્ત થયા છે, એ પહેલા પંદર વર્ષે એમની વિચારની પરિસ્થિતિની એ વાત હતી. કે પંદર વર્ષે એક વર્ષ જાય કે બે વર્ષ જાય તો આકરું લાગે કે, અરે...રે...! આ તો પંદરના સત્તર વર્ષ થઈ ગયા અને કાલ સવારે વીસ અને પચ્ચીસ થઈ જશે. આટલું મોડું ન ચાલે. જે યુવાન ઉમરમાં સંસારીઓ

આત્માઓને અનેક પ્રકારના બાહ્ય ભોગ-ઉપભોગના ઉદય શરૂ થાય છે, મોક્ષ આત્માઓની સ્થિતિ બીજી થાય છે. એ કહે છે કે અહીંથી છૂટીને... ઘણું મંથન છે. એ કાળમાં એમનો ઘણો વૈરાગ્ય છે. એટલે એક-બે વર્ષ ખાલી જાય છે. સાધનાની સિદ્ધિ અંદરમાં દેખાતી નથી, તો એમ કહે છે કે, અરે...! આ તો કાળ-જીવન ચાલ્યું જાય છે. શું થાય છે એને ? જીવન ચાલ્યું જાય છે આ તો, એમ લાગે છે. એમ અંદરથી એને પ્રાપ્તિની લગની લાગવી જોઈએ. જેને જે વસ્તુ તીવ્ર લગનથી જોઈએ એમાં એને મોડું થાય એ પાલવે નહિ. આ એમની વાસ્તવિકતા છે.

એટલે કહે છે કે 'એની લગની લાગવી જોઈએ.' કેવી ? 'એને માટે ગાંડા થવું જોઈએ.' આમ છે. જેમ પાગલ માણસને મનુષ્યોચિત વ્યવહાર રહેતો નથી. અને લોકો મને ગાંડો કહેશે એવો વિચાર સુદ્ધાં રહેતો નથી અને પ્રવૃત્તિ કરે છે. જો એને ગાંડપણની શરમ આવે તો ગાંડપણને યોગ્ય પ્રવૃત્તિ ન કરે. એમ લોકલાજને છોડીને, લોકોની રૂઢિ, રીતરિવાજ અને સમાજના બંધન તોડીને પ્રવૃત્તિ કરવી એને 'ગાંડા થવું જોઈએ.' એમ કહેવામાં આવે છે. આમ વાત છે.

મુમુક્ષુ :- 'ગુરુદેવે' કમાલ કરી. શબ્દો કેવા મૂક્યા છે !

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- એ બધી વાસ્તવિકતા (છે). એમાંથી પસાર થયેલા છે. જેને સમ્યગ્દર્શન થાય છે એને લગની લાગે છે. અને એ પરમાત્માને મેળવવા એકવાર ગાંડા થાય છે. કોઈને બહાર દેખાય અને કોઈને બહાર ન દેખાય. પણ પરિણામની તો એ જ સ્થિતિ આવે છે. એટલે એ તો બધા જ સાધકજીવો પોતાના અનુભવનું વર્ણન કરે છે. એક દષ્ટિએ જોઈએ તો એ ઉપદેશ આપે છે એમ તો બહારથી કહેવાય, પણ એક એનો દષ્ટિકોણ જોઈએ તો એવો છે કે એ પોતાના અનુભવને વર્ણવે છે. પોતાનો અનુભવ કહે છે કે આમ થવું જોઈએ. અમને એમ થવું હતું અને તમને એમ થાશે તે દિ' પ્રાપ્તિ થાશે. આથી બીજો કોઈ રસ્તો નથી. એમ છે. એ સર્વ એ સ્થિતિ છે. કોઈની

ફેરફારવાળી સ્થિતિ છે, એમ છે નહિ. અને એનું કારણ એ છે.

જગતમાં પણ માણસને બહુ લાભનું કારણ હોય, ત્યારે એ લાભના પ્રસંગને એ Top priority આપે છે. એટલે શું કરે છે ? કે બીજા પ્રસંગો ઊભા થાય ત્યારે એ એને કેવી રીતે Avoid કરે છે, એની એને બધી તરકીબ હોય છે પછી. કે ભાઈ ! ફલાણાને ત્યાં લગન છે એટલે એમ કહે કે, બાપુજી ! તમે જાજો ને. તમે જશો તો સારું લાગશે. અને હું પાછો અહીંયાં કામમાં રોકાણો છું અને મેં Director ની મિટિંગ બોલાવી છે અને મારે મહત્વના નિર્ણયો લેવાના છે. ઠીક !

બે અબજનો, બસ્સો કરોડનો Plant નાખ્યો હોય, અને જલ્દી Production શરૂ કરવું હોય, એની આંકડા સ્થિતિ એમ કહેતી હોય, કે છ મહિના મોડું થાય તો આટલો નફો જાય, બાર મહિના મોડું થતું હોય તો Cost of production આટલી વધે. અને બે વર્ષ મોડું થાય તો દિવાળુ કાઢવું પડે. એ બસ્સો કરોડે બસ્સો કરોડ પાણીમાં જાય. એ એની ગંભીરતા દેખાય છે. બસ્સો કરોડ જાય તો ટીંગાઈ જાય, પણ આત્મા નરકે, નરક નિગોદમાં જાય તો એને કાંઈ દરકાર કરવી નથી. જીવની આ પરિસ્થિતિ છે. એણે મૂલ્યાંકન કર્યું નથી. આ વિષયનું એણે મૂલ્યાંકન કાંઈ કર્યું નથી. એવી પરિસ્થિતિ છે. એટલે બાપુજીને એમ કહે કે, તમે જશો તો સારું લાગશે. કોઈનું મરણ થયું હોય તો મોટા ભાઈને કહે કે તમે જાવ તો જરા ઠીક છે. મારે પાછી આ મિટિંગ છે. ઠીક ! અને અહીંયાં 'સોનગઢ' જવું હોય તો કહે, મારે પણ હજી ઘરે મહેમાન આવવાના છે. ઠીક ! સાધારણ કારણ મળે તો સ્વાધ્યાય છોડી દે. સાધારણ કારણની આડશમાં સત્સંગને છોડી દે. સ્વાધ્યાય એટલે સત્સંગ છે. સાધારણ પ્રસંગને કારણે જ્ઞાનીનો સમાગમ છોડી દે. તો એને આત્માની લગની અને એનું ગાંડપણ આવવું તો બહુ આવેની વાત છે. એ પરિસ્થિતિમાં તો કદી આત્માની નજીક જવાતું નથી. મુમુક્ષુ :- પતંગિયાની જેમ ઝપટ કરવી જોઈએ.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- હા. વિચાર કરવા રહે નહિ કે દીવો બહુ રૂપાળો છે. એમાં શું છે ? ચક્ષુ ઇન્દ્રિયનો એનો વિષય છે. ભૂતકાળમાં એણે રૂપ જોવા પાછળ ઘણું ગાંડપણ કર્યું છે. પુદ્ગલ પરમાણુના રંગગુણની પર્યાય છે અને એને જોવાનો એને મોહ અને આકર્ષણ એટલું વર્ત્યું છે, કે એ જીવ પતંગિયાના ભવમાં આવ્યો છે. ત્યાં પણ પ્રકૃતિવશ એની એ સ્થિતિ છે કે જ્યાં દીવો જોવે છે, ત્યાં એના શરીરને હોમી દે છે. એ શરીરને હોમી દે છે એ તો બહારની સ્થિતિ છે. અંદરના એના પરિણામની ઝપટ શું છે એનો અંદાજ મારવા જેવો છે. કે ભલે બળીને સ્વાહા થઈ જાવ પણ રૂપથી હું દૂર રહી શકીશ નહિ. આ પરિસ્થિતિ છે.

એ વિભાવમાં તો જીવ ગાંડો થાય જ છે, વિભાવમાં તો ગાંડો થાય જ છે. આ બધા ગાંડપણ અનેક પ્રકારના ચાલે જ છે ને. ફેશનને નામે કપડાના અને બીજાના, ત્રીજાના બધા ગાંડપણ નથી ચાલતા ? ત્યાં કાંઈ એને વિચાર-વિવેકનો પ્રશ્ન નથી અને અહીંયાં તો એમ કહે કે જરાક વિવેક રાખવો જોઈએ, આપણે જરાક વિવેક રાખવો જોઈએ. ભલે ધર્મ તો કરવો પણ વિવેક રાખીને ધર્મ કરવો. ઠીક ! એને અંદરમાં (-આત્મામાં) ઊછળીને જાવું છે એ વાત એમાં રહેતી નથી. એમ વાત છે.

કહે છે કે 'એની લગની લાગવી જોઈએ. એને માટે ગાંડા થવું જોઈએ. આવા પરમાત્મસ્વરૂપની ધૂન લાગવી જોઈએ.' એવી ધૂન લાગે કે એને ખાતી વખતે શું ખાઉં છું એની એને ખબર રહે નહિ. શું ખાઉં છું એ ખબર ન રહે તો રસોઈ કેવી બનાવી છે એનો સ્વાદ લેવાનો પ્રશ્ન રહેતો નથી. 'ગુરુદેવશ્રી' એટલા માટે દૃષ્ટાંત આપતા, કે અડદની દાળ સદડી ન બનાવી હોય તો ઢીંચણીયું ઊડે. સત્તાપ્રિય પ્રકૃતિવાળો માણસ હોય અને ઘરમાં બૈરાએ દાળ જરા સરખી ન બનાવી હોય, એટલે પગે ઢીંચણીયું હોય એનો ઘા કરે. ગુસ્સો કરે. એ આખે આખો અડદની દાળમાં ઘૂસી ગયો. આખે આખો અડદની દાળમાં એ ઘૂસી ગયો છે. હવે આવી નાની વાતમાં એના પરિણામના ઠેકાણા ન રહે એને

એવી આત્માની ધૂન ક્યાંથી લાગે કે આ ખાઉં છું એની ખબર એને ન રહે. ધૂન એને એવી લાગે. પછી એ ચીજ કેવી બનાવી છે અને કેવી નથી બનાવી ? સારી છે કે ખરાબ છે એનો વિકલ્પ તો એને આવે ક્યાંથી ? 'ટોડરમલ્લજી'નું એક દષ્ટાંત છે. વયમાં એ ધૂનમાં રહેતા હતા. બહુ ધૂનમાં રહેતા હતા.

મુમુક્ષુ :- 'મોક્ષમાર્ગ પ્રકાશક' લખ્યું ત્યારે જ રહેતા હતા ને ?

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- હા, 'મોક્ષમાર્ગ પ્રકાશક' લખ્યું ત્યારે. ઘણા શાસ્ત્રોનું દોહન કરીને લખ્યું છે ને. બહુ અતિશય બુદ્ધિશાળી હતા, અસાધારણ બુદ્ધિશાળી હતા. અને નાની ઉંમરમાં પણ એમને... ૨૮ વર્ષે તો એમનો દેહાંત છે. નાની ઉંમરમાં એમણે સેંકડો શાસ્ત્રો માત્ર વાંચેલા નહિ પણ એનું તાત્પર્ય કાઢે એમ વાંચેલા. કહેનારના અનુભવના ઊંડાણને પહોંચી વળીને વાંચેલા. એટલે જ્યારે પોતે શાસ્ત્રની રચના કરવા બેઠા, ત્યારે એ વિષયની એટલી લગની અને ધૂન હતી કે, છ મહિના સુધી રસોઈમાં એમના માતાએ મીઠું નહોતું નાખ્યું. તે દિ' તો નાની ઉંમર હતી. એટલે એમની માતા રસોઈ બનાવતા. છ મહિના સુધી મીઠું જ ન નાખ્યું. એને એમ થયું કે જોઉં તો ખરી દીકરાને ખબર ક્યારે પડે છે કે આ મીઠા વગરની રસોઈ થઈ છે. એમને એમ છ મહિના ચાલ્યા ગયા. છ મહિને એણે એકવાર કીધું. બા ! કાંઈક મીઠું નાખવું ભૂલી ગયા લાગો છો. આજે રસોઈમાં મીઠું નથી. તો (બા) કહે, આજે જ નથી ? મને તો એમ લાગે છે કે આજે નથી. તો કહે, છ મહિનાથી હું નથી નાખતી. ઠીક ! એ વિષયની એટલી ધૂન હતી કે છ-છ મહિના એને ખબર પડી નથી કે રસોઈમાં મીઠું નથી. એવી એને સ્વરૂપની ધૂન, પરમાત્મતત્ત્વની ધૂન લાગવી જોઈએ.

જો 'સારી ધૂન લાગે...' જો અધ્યાહાર છે ત્યાં. 'તો...' જો અને તો એકબીજાને અપેક્ષિત છે ને ? એટલે જો 'સારી ધૂન લાગે તો જે સ્વરૂપ અંદરમાં છે તે પ્રગટ થયા વિના કેમ રહે ?' રહે જ નહિ એમ કહેવું છે. એ બતાવવા માટે પ્રશ્નાર્થ લીધો છે. કે જો 'સારી

ધૂન લાગે તો જે સ્વરૂપ અંદરમાં છે તે પ્રગટ થયા વિના કેમ રહે ?' જ્ઞાનીઓનો, સર્વ જ્ઞાનીઓનો આ અનુભવ છે, કે સ્વરૂપની ધૂન લાગે છે ત્યારે સ્વરૂપ પ્રગટ થયા વિના રહેતું નથી. એ ધૂન કહો, ભાવનાની ઉત્કૃષ્ટ પરિસ્થિતિ કહો કે, જો એ ભાવનામાંથી ચૈતન્ય પ્રગટે નહિ તો ચૌદ બ્રહ્માંડને ફરવું પડે. આ એમનો નિશ્ચય કહે છે. સત્યનો અનુભવ, સત્યનો આ પોકાર છે. સત્યના અનુભવમાંથી સત્ય સ્વરૂપનો આ પોકાર છે કે જો અંદરમાં પરિણામની ખરી ભાવના અને ધૂનની પરિસ્થિતિ ઊભી થાય અને અંદરથી પરમાત્મા પ્રગટે નહિ તો ચૌદ બ્રહ્માંડને ફરી જવું પડે. પણ ચૌદ બ્રહ્માંડ શું એક રજકણને ફેરવી શકાતો નથી. એટલે એ પરિસ્થિતિ અશક્ય છે. તો અહીંયાં ચૈતન્યના અનુભવથી વંચિત રહેવું પણ એના માટે અશક્ય છે. એ બને નહિ કોઈ દિવસ.

ભૂતકાળમાં કોઈ જીવાત્માઓને વિષે એવું બન્યું નથી. એવા અનંતા થયા કે જેને આત્માની, પરમાત્માની ધૂન લાગી હોય અને એને આત્મા પ્રગટ્યો ન હોય. એવું ભૂતકાળમાં ક્યારે પણ એક અપવાદ ખાતર એક દાખલો બન્યો નથી અને ભવિષ્યમાં બનવાનો નથી. સાધકમાં આવવા માટે અનંતા આત્માઓ આ રીતે તૈયાર થશે પણ બધાની આ જ પરિસ્થિતિ (રહેવાની). કદી કોઈને એમાં એવું નહિ હોય કે કાળ પાક્યો નથી અને એના નસીબમાં અનુભવ નથી, માટે એને ધૂન લાગી છે પણ સફળતા મળતી નથી. ન ભૂતો-ન ભવિષ્યતિ. કદી બનતું નથી.

એને અહીંયાં જોર આપ્યું છે કે, 'સારી ધૂન લાગે તો જે સ્વરૂપ અંદરમાં છે તે પ્રગટ થયા વિના કેમ રહે ? જરૂર પ્રગટ થાય જ.' ન થાય એ પ્રશ્ન રહેતો નથી. આ અહીંયાં એમ બતાવે છે કે, જે કાંઈ બાકી રહી ગયું છે એ પોતાના કારણે બાકી રહી ગયું છે. આ જીવને અંદરમાં ક્યાંક પણ એવું રોકાવાનું કારણ છે અથવા એ પ્રધાનપણું આપે છે, મુખ્યપણું આપે છે એને લઈને એ આત્માને ગૌણ કરે છે, પરમાત્માને એ ગૌણ કરે છે. અથવા પરમાત્મસ્વરૂપ જે પોતાનું

સ્વરૂપ છે એની એને ઓળખાણ નથી. જો એને ઓળખાણ હોય તો કીમત આવ્યા વિના રહે નહિ.

એક જ હીરો હોય અને એક ઝવેરી એમ કહે કે લાખ રૂપિયા સુધી લેવો છે અને બીજો એને તપાસીને એમ કહે કે પચાસ લાખ દેવા તૈયાર છું, ત્યારે એણે કીમત પચાસ લાખની પચાસગણી નથી આંકી, એથી વધારે આંકી છે. એને પચાસ લાખ ખર્ચાને પચાસ લાખને પાંચસોમાં નથી વેચવો. એને પાંચસોના નફા માટે પચાસ લાખનું ઇન્વેસ્ટમેન્ટ નથી કરવું. એની સામે બીજા પચાસ લાખ જોવે છે કે એક કરોડનો હીરો છે, આ લાખમાં મૂલવે છે, આપણે પચાસ લાખ દેવા તૈયાર છીએ. ઓળખાણે એની કીમત આવે છે.

એમ એની ઓળખાણ ન કરે, સ્વાધ્યાય આદિનો વ્યવહાર છે એ આત્માની ઓળખાણ કરાવવા માટે છે. એ જો ઓળખાણ ન કરે તો કીમત આવે નહિ અને કીમત ન આવે તો એનો એને રસ આવે નહિ. નીરસપણું થઈ જાય. સાંભળતા... સાંભળતા... સાંભળતા... શું થાય ? નીરસપણું થઈ જાય છે કે આત્મા ભિન્ન છે... ભિન્ન છે... ભિન્ન છે... એક દ્રવ્ય બીજા દ્રવ્યનું કરતું નથી. આત્મા ભિન્ન છે. પરમાત્મા છે, ફલાણું છે, ઢીકણું છે. બધી આપણને ખબર છે પણ હવે અત્યારે દીકરાના લગ્ન હોય, દીકરીના લગ્ન હોય એ કામ કરવું કે આ કરવું ?

મુમુક્ષુ :- રોજ એનું એ જ આવે.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- અને આમાં તો પાછું રોજ એનું એ આવે. આમાં બીજું કાંઈ નવીન થોડું છે ? રોજ ઊઠીને એની એ માંડે છે આ તો. કહે છે, ભાઈ ! એ તારા પરમાત્માને તું ઠેભે ચડાવે છો. જેમ ઘરમાં હીરો પડ્યો હોય અને ઓળખે નહિ તો ઠેબું મારે, એમ સિદ્ધપદને અને અરિહંતને લાત મારવાની વાત છે આ, બીજું કાંઈ છે નહિ. એની અંદર એનો અનાદર છે. જેનો પરમોત્કૃષ્ટ આદર કરવા લાયક છે એ જ પરમાત્મપદનો અનાદર કરે છો, તને એ બધું આકરું પડશે. અહીંયાં કાંઈ કાયમ રહેવાનો અમરપટો લઈને આવ્યો નથી. પાછો ક્યાંય ચાલ્યો જઈશ.

જગતના પરિભ્રમણમાં અનંતા-અનંત જીવો પરિભ્રમણના વંટોળમાં ચડીને પરિભ્રમણ કરે છે. આ Cyclone - વંટોળ થયું હતું ને ? થોડા કલાકે તો લોકો ત્રાસી ગયા. સાતેક કલાક જેટલું ચાલ્યું. પણ એમ થયું કે શું થાશે ? કુદરતનું તાંડવ ! આ પરિભ્રમણનું તાંડવ છે !! એમાં અનંતા-અનંત જીવો પરિભ્રમણ કરે છે. અનંતા સિદ્ધાત્માઓથી અનંતગુણા તો એક બટાટાની કણીમાં છે. જગતમાં કેટલા બટાકા ને કેટલા કંદમૂળ છે અને કેટલી વનસ્પતિ અને કેટલા પાણીકાયના, કેટલા વાયુકાયના કેટલા જીવો છે ! બહુ મોટી સંખ્યામાં. નિગોદનું પેટ બહુ મોટું છે. એ જગ્યા ચૌદ બ્રહ્માંડમાં ૩૪૩ ઘનરાજૂ છે. ૩૪૩ ઘનરાજૂ છે. એક સોયની કણી, Point મૂકે એટલી જગ્યા જીવ વિનાની ખાલી નથી. સોયના ટોપકું જેટલી પણ કોઈ જગ્યા, ક્યાંય જગ્યા (ખાલી નથી). એવા ઠાંસી ઠાંસીને અનંતા જીવોનો પરિભ્રમણનો વંટોળ ચૌદે બ્રહ્માંડમાં ચાલે છે. અહીંયાં ચેતીને ન સમજ્યો તો ક્યાં જઈશ કાંઈ પત્તો લાગશે નહિ. ગોત્યો નહિ જડે. એમ છે.

ફરવા જાય છે ને ! આ Hill station માં. આ 'મહાબળેશ્વર' બાજુ મોટી ખીણ છે. આ બાજુ બહુ મોટી છે. 'મસુરી' ને એ બાજુ તો બહુ મોટી ખીણ છે. હિમાલયના પહાડોમાં. એવી મોટી ખીણ હોય છે કે ઘોડેસવારી કરીને ઘણા મરે છે. આપણા (એક મુમુક્ષુભાઈનો) દીકરો એમાં (મરી ગયો). જીવ તો જીવવાનો સવાલ નથી પણ મડદું હાથમાં ન આવે. ઘોડાનું મડદું હાથમાં ન આવ્યું. માણસનું મડદું હાથમાં આવવાનો સવાલ નથી. નીચે એવી ખીણમાં જાય છે.

એમ આ જગતમાં નિગોદની બહુ મોટી ખીણ છે. ક્યાં જાય, જીવનો પત્તો લાગે નહિ. કોણ ક્યારે કેવો હતો (એની ખબર પડે એવું નથી). કંઈક રાજેશ્વરી એમાં પડ્યા છે. જેને એમ કહીએ કે ખમા... ખમા... બધા કરતા હોય. છે કોઈ ? એમ કહે તો એના એક હોલના સો દરવાજા, હજાર દરવાજાએ હજાર પહેરેદાર ઊભા હોય. જી હજૂર ! કહીને નમન-નમન કરે. ક્યાં જાય એનો પત્તો લાગે નહિ.

કેમ ? કે એણે પોતાની કીમત કરી નહિ તેથી. બીજું કાંઈ કારણ નથી. એ જગતના પદાર્થોની કીમત કરી અને ત્યાં રોકાણો. કુદરત એને ત્યાં ફરવામાં રાખે છે. એની કીમત છોડીને જે આત્મામાં રોકાણો એટલે સ્થિર થયો, એ સદાય અવિચળ શાશ્વત ગતિને પામે છે. સિદ્ધ ગતિને પામે છે. એને દુઃખનું નામનિશાન રહેતું નથી. નિશાન પણ રહેતું નથી કે પૂર્વે એને દુઃખ પડ્યું હતું, એવી કોઈ નિશાની રહેતી નથી. એવી સ્થિતિને એ પામે છે.

લાભ-નુકસાનની તુલના કરે અને એને જો એ વાત સમજાય કે આમાં લાભ કેટલો અને નુકસાન કેટલું ? નુકસાનથી બચે (કેટલો) ? કેટલા મોટા

નુકસાનથી બચાય અને કેટલો મોટો લાભ થાય ? એ સમજાય તો એને એની સર્વોત્કૃષ્ટ અગ્રતા આવ્યા વિના રહે નહિ. સર્વોત્કૃષ્ટ અગ્રતાને પરમ ઉપાદેયતા કહેવામાં આવે છે. એનું પરમ ઉપાદેયપણું આવે છે અને પરમ ઉપાદેયપણું આવે છે, ત્યારે જીવને એના લાભથી વંચિત નહિ રહેવું પડે, એની શ્રીગુરુ અહીંયાં Guarantee આપે છે કે આ અમારી તને Guarantee છે. એકવાર તું બરા વેશમાં આવ. બાકી ઉપર ઉપરથી ખોટો વેશ બતાવ, તો તારો પરમાત્મા છેતરાશે નહિ. જગતના જીવો કદાચ છેતરાશે. ભાઈ બહુ સારા... ભાઈ બહુ સારા.. ભાઈ તો બહુ ઊંચી ઊંચી વાતો કરે છે, પણ એમાં પરમાત્મા છેતરાશે નહિ. અહીં સુધી રાખીએ.

(શ્રીમદ્ રાજચંદ્ર પત્રાંક)

૩૧૯

મુંબઈ, માહ સુદ ૫, બુધ, ૧૯૪૮

અનંતકાળ થયાં સ્વરૂપનું વિસ્મરણ હોવાથી અન્યભાવ જીવને સાધારણ થઈ ગયો છે. દીર્ઘકાળ સુધી સત્સંગમાં રહી બોધભૂમિકાનું સેવન થવાથી તે વિસ્મરણ અને અન્યભાવની સાધારણતા ટળે છે; અર્થાત્ અન્યભાવથી ઉદાસીનપણું પ્રાપ્ત હોય છે. આ કાળ વિષમ હોવાથી સ્વરૂપમાં તન્મયતા રહેવાની દુર્ઘટતા છે; તથાપિ સત્સંગનું દીર્ઘકાળ સુધી સેવન તે તન્મયતા આપે એમાં સંદેહ નથી થતો.

જિંદગી અલ્પ છે, અને જંજાળ અનંત છે; સંખ્યાત ધન છે, અને તૃષ્ણા અનંત છે; ત્યાં સ્વરૂપસ્મૃતિ સંભવે નહીં; પણ જ્યાં જંજાળ અલ્પ છે, અને જિંદગી અપ્રમત્ત છે, તેમજ તૃષ્ણા અલ્પ છે, અથવા નથી, અને સર્વ સિદ્ધિ છે ત્યાં સ્વરૂપસ્મૃતિ પૂર્ણ થવી સંભવે છે. અમૂલ્ય એવું જ્ઞાનજીવન પ્રપંચે આવરેલું વહું જાય છે. ઉદય બળવાન છે !

૩૨૪

મુંબઈ, માહ વદ ૪, બુધ, ૧૯૪૮

ચો તરફ ઉપાધિની જવાલા પ્રજ્વલતી હોય તે પ્રસંગમાં સમાધિ રહેવી એ પરમ દુષ્કર છે, અને એ વાત તો પરમ જ્ઞાની વિના થવી વિકટ છે. અમને પણ આશ્ચર્ય થઈ આવે છે, તથાપિ એમ પ્રાયે વર્ત્યા જ કરે છે, એવો અનુભવ છે.

આત્મભાવ યથાર્થ જેને સમજાય છે, નિશ્ચલ રહે છે, તેને એ સમાધિ પ્રાપ્ત હોય છે.

સમ્યગ્દર્શનનું મુખ્ય લક્ષણ વીતરાગતા જાણીએ છીએ; અને તેવો અનુભવ છે.

ટ્રસ્ટના 'સ્વાનુભૂતિપ્રકાશ'ના આ ગુજરાતી અંક (ઓક્ટોબર-૨૦૧૧નું) શુલ્ક શ્રી વિજય ઓઈલ મીલ, મુંબઈના નામથી સાભાર પ્રાપ્ત થયું છે, જેના કારણે આ અંક બધા પાઠકોને મોકલવામાં આવ્યો છે.

મંગલમય સુપ્રભાત

આજે લૌકિક તહેવાર છે. ગઈકાલે અલૌકિક ધાર્મિક તહેવાર હતો. ભગવાનનો નિર્વાણ થયો, સિદ્ધાલયમાં પધાર્યા. દેવોએ એનો ઉત્સવ કર્યો અને ધાર્મિક મહોત્સવ તરીકે એની ભક્તિ અને બહુમાન થયા. આજનો દિવસ તો લૌકિક રીતે, નવું વર્ષ બેઠું, નવા વર્ષનું પહેલું પ્રભાત, સવાર છે એટલે પ્રભાત છે એમ કહેવામાં આવે છે.

આત્મામાં નિજજ્ઞાનનો - સ્વરૂપજ્ઞાનનો પ્રકાશ થાય, જે જ્ઞાનમાં પોતાનું નિરાવરણ કેવળજ્ઞાન સૂર્ય જેમાં છે એવું સ્વરૂપ પ્રકાશમાન થાય, કેવળજ્ઞાન સ્વરૂપ શુદ્ધાત્માના જે પ્રકાશમાં દર્શન થાય એવા જ્ઞાનના પ્રકાશને ખરેખર સુપ્રભાત કહેવામાં આવે છે. એ ખરેખર સુપ્રભાત છે અને સૌથી મોટું સુપ્રભાત કેવળજ્ઞાન પ્રગટ થાય તે છે. આત્મજ્ઞાન પ્રગટ થાય તે સુપ્રભાત છે. મુમુક્ષુને માટે શરૂઆત છે.

જે સાધક આત્માઓ છે એને એવું સુપ્રભાત પ્રગટ થઈ ગયું છે, એને કેવળજ્ઞાનની અભિલાષા છે. એને કેવળજ્ઞાન પ્રગટે એ સુપ્રભાત છે. બાકી તો આવા નવા વર્ષ તો અનંતવાર આવ્યા અને અનંતવાર ગયા. સૂરજ રોજ ઊગે છે અને રોજ આથમે છે એમાં કાંઈ નવાઈ નથી, એમાં કાંઈ અપૂર્વ નથી. જે દિવસે, જે ધન્ય પળે પોતાનું આત્મહિત થાય તે નવીન છે ત્યાં તે ગમે તે દિવસ હોય તો તે સુપ્રભાત છે. ભલે એ કારતક સુદ એકમ ન હોય તોપણ એ સુપ્રભાત જ છે.

જેને એક જ ધ્યેય છે, આ જીવનમાં જેનું એક જ ધ્યેય છે કે મારે મારું આત્મહિત કરી છૂટવું છે, તેને હિત થાય ત્યારે પ્રભાત, ત્યારે નવું વર્ષ, નવું જીવન; નવું વર્ષ શું નવું જીવન પ્રગટ થયું અને કોઈપણ રીતે, ગમે તેમ કરીને પણ એ કરવા યોગ્ય છે, એ કરી લેવા યોગ્ય છે.

- (પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈ)

સુપ્રભાત

અજ્ઞાન તથા મિથ્યાત્વ તિમિરનો નાશ કરી સમ્યગ્દર્શનરૂપી સુપ્રભાત પ્રગટ કરીએ એવી ભાવના સાથે 'સ્વાનુભૂતિપ્રકાશ' ના સર્વ પાઠકવર્ગને નુતન સુપ્રભાતની શુભકામના.

- સ્વાનુભૂતિપ્રકાશ પરિવાર

દ્રવ્યદષ્ટિ પ્રકાશ પત્રાંક-૩૦ ઉપર પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈનું પ્રવચન તા. ૭-૦૮-૧૯૮૧

(ગતાંકથી ચાલુ)

આ એના જેવું છે - માણસ ખાંડ કે અનાજ લેવા જાય છે ને ! પછી એમાંથી પસંદ કરવી હોય તો વેપારી ભાષામાં એમ કહે કે, છૂટી દચો. (એટલે વેપારી એમ કહે કે) દસ ગુણ પડી છે. તો (આ કહે) દસ ગુણમાંથી નમૂનો કાઢો. એટલે દસેય ગુણમાંથી નમૂનો કાઢે અને દસેયની ઢગલી કરે. પછી એ જોવે નમૂના સામે અને પછી બોલે એમ કે, આ પાંચમી ગુણ સારી છે. શું કહે ? પાંચમો નમૂનો સારો છે એમ ન કહે, પાંચમી ગુણ સારી છે, (એમ કહે). એટલે જોવે નમૂના સામે અને લક્ષમાં આખી ગુણ આવે ! આ જ્ઞાનનું કાર્ય છે - એક સાથે બે જગ્યાએ કામ કરવાનું ! અનુભવ કરે પર્યાયનો અને લક્ષ હોય ત્રિકાળીનું - એમ કહેવું છે. શું (કહેવું છે) ? અનુભવ કરે - વેદન કરે પર્યાયનું અને લક્ષ હોય ત્રિકાળીનું ! એ આના જેવું છે કે, જોવે નમૂનાને અને લક્ષમાં લે ગુણને. (એ એમ કહે), પાંચમી ગુણ સારી છે ભાઈ ! પાંચમી ગુણ ઉપર આપણું નામ લખી નાખો ! આપણા નામનું નિશાન કરી નાખો ! આ ગુણ મોકલજો, દસમાંથી આ એક ગુણ લીધી છે. પાંચમી ગુણ મને મોકલજો. જોવે નમૂના સામે અને લક્ષમાં (લે ગુણને) ! જ્ઞાન કેવું કામ કરે છે ! એક સાથે Double કામ કરે છે ! આમ થાય છે. આ અજ્ઞાનીને પણ આમ થાય છે. ચાલતી વખતનું દષ્ટાંત નથી લેતાં ? ચાલે છે ત્યારે જોવે છે Traffic સામે કે, કોઈની સાથે ભટકાઉં નહિ, ખાડામાં પડું નહિ, રસ્તો, Traffic બધું ધ્યાન રાખે અને જ્યાં Crossing હોય, ચાર રસ્તા ભેગા થતાં હોય ત્યારે એક સાથે બધાં રસ્તાનું ધ્યાન રાખે. સામેથી, જમણી બાજુથી અને બીજી બાજુથી (એમ બધી બાજુથી ધ્યાન રાખે). આ આપણે ગાંધીસ્મૃતિ પાસે અહીંથી જઈએ છીએ કે નહિ ? અહીંયા તો Traffic ના નિયમ જેવું છે જ નહિ, Wrong side માંથી પણ લોકો આવે. ડાબી બાજુથી

પણ આવે અને લોકો જમણી બાજુથી પણ Cross કરતા હોય. એક સાથે ત્રણ બાજુનું અને રસ્તાનું - બધું ધ્યાન રાખવું પડે. ત્રણ દિશા ચોથું નીચે ક્યાંય ખાડો નથી, કાદવ નથી, બીજું નથી, ત્રીજું નથી, કોઈ બકરુ નથી, કોઈ કચરાતું નથી - (એમ) ચાર જગ્યાએ ધ્યાન રાખે, છતાં લક્ષ પહોંચવાનું હોય કે ઘરે જાવું છે. કેટલું જ્ઞાનમાં સામર્થ્ય છે !! જ્ઞાનમાં એ જાતનું સામર્થ્ય છે. જ્ઞાન એટલે માત્ર જાણવું, એમ નથી કાંઈ. જ્ઞાનમાં ઘણું ભર્યું છે. અભ્યાસ કરે (અને) સૂક્ષ્મતાથી જોવે તો ઘણું ભર્યું છે. (કોઈ એમ કહે કે) જ્ઞાન...જ્ઞાન શું કરો છો ? જ્ઞાન એટલે જાણે, જાણે તે જ્ઞાન...પતી ગયું. ભાઈ ! જ્ઞાનમાં તો મોટો ભંડાર ભર્યો છે ! એટલો બધો ભંડાર ભર્યો છે. છત્રસ્થના જ્ઞાનમાં આટલી બધી વિશેષતાઓ છે.



(અહીંયા શું કહે છે ?) “અપ્રસિદ્ધ અવેદક મુખ્ય અખંડ સ્વભાવમે શ્રદ્ધાકે સ્વઅસ્તિત્વરૂપમે પ્રસરતે હી...” આ શ્રદ્ધાપ્રધાનતાથી વાત કરી છે. “...પ્રસિદ્ધ વેદન ગૌણ હોકર...” પહેલા કહે કે (જ્ઞાન)વેદનને મુખ્ય કરીને રાગને ગૌણ કરે. હવે એમ કહે છે કે, પ્રસિદ્ધ જ્ઞાનના વેદનને ગૌણ કરીને, “...એક હી કાલ ત્રિકાલી વ વર્તમાન દોનો ભાવોંકા અનુભવ હોતા હૈ.” એ વર્તમાન પર્યાય ગૌણ થાય તો ત્રિકાળીનો અનુભવ થાય. (એમ કહે છે). ગૌણપણે પણ એનું વેદન છે, ત્રિકાળીનું વેદન નથી. એકસાથે બન્નેનું યુગપદ્ જ્ઞાન છે. એને પ્રમાણજ્ઞાન કહેવામાં આવે છે.

(એક પત્રમાં) કેટલી વાત લીધી છે ! ભેદજ્ઞાનની વાતમાં રાગને ગૌણ કરાવ્યો, (જ્ઞાન) વેદનને મુખ્ય કરાવ્યું. આગળ ચાલતાં ત્રિકાળીને મુખ્ય કરાવ્યો (અને) વેદનને ગૌણ કરાવ્યું અને પ્રમાણથી બન્નેનો અનુભવ

થાય છે, એમ લીધું. આ ગુરુદેવની વાણીનો સાર મેં આટલો લીધો છે. એમાં બધું આવી ગયું. એક પેરાગ્રાફમાં (બધું આવી ગયું). નહિતર એટલો ગુરુદેવનો પરિચય નથી, (પણ) અંતરથી બધી વાત અનુભવગોચર છે એટલે ભાષામાં ઉતારી છે.

“યહ હી ભેદજ્ઞાન હૈ.” અમારે ક્યારેક ભેદજ્ઞાનની

ચર્ચા થતી ત્યારે એમ કહેતાં કે, ભેદજ્ઞાનનો વિષય તમને બહુ સ્પષ્ટ છે ! એમને ગુરુદેવનો પરિચય એટલો નહિ. ગુરુદેવના પ્રવચનમાં ભેદજ્ઞાનનો વિષય બહુ ચાલે. જ્યારે આવે ત્યારે ઘણો સરસ ચાલે. “રાગસે પૃથક્ જ્ઞાનકા અનુભવ ઐસે હી હોતા અન્યથા નહીં.” એ ત્રીસમો (પત્ર પૂરો) થયો.

દ્રવ્યદષ્ટિ પ્રકાશ પત્રાંક-૩૩ ઉપર પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈનું પ્રવચન તા. ૦૮-૦૮-૧૯૯૧

આત્માર્થી...ધર્મસ્નેહ !

“પત્ર તા. ૨૨-૧૧ કા યથા સમય મિલા.” બાવીસ તારીખનો પત્ર ચાર-પાંચ દા’ડે મળ્યો હશે ને નવ તારીખે જવાબ લખ્યો છે. જે અવતરણ ચિહ્નમાં છે એ પ્રશ્ન છે. “અસ્થિરતાસે...” એટલે મોક્ષમાર્ગી જીવને ચારિત્રગુણની પર્યાયમાં જે અસ્થિરતા હોય છે એને કારણે (એટલે કે) અસ્થિરતાથી. “...દેવાદિક પ્રત્યેકે પરિણામોમે...” (અર્થાત્) દેવ, ગુરુ, શાસ્ત્ર પ્રત્યેના પરિણામોમાં. “...ખેદ વર્તે...” (એટલે કે) ખેદ તો વર્તે છે. કેમકે એ તો રાગ છે એટલે ખેદ વર્તે (એમ લખ્યું છે). કેમકે આકુળતામય છે ને ! અને અભિપ્રાયમાં એને ઈચ્છતા નથી. “...ખેદ વર્તે વ અખંડ સદ્ભાવરૂપ પરિણમન હોતે હુએ...” અને અખંડના સદ્ભાવરૂપે (એટલે કે) બીજો અંશ છે એ અખંડ પ્રત્યે વળેલો છે તેમાં અખંડનું અસ્તિત્વ પકડ્યું છે. એવું પરિણમન હોતે હુએ... “...ધર્મીજીવ...” ધર્મીજીવની આ દશા છે. અસ્થિરતાથી દેવાદિક પ્રત્યે ખેદ સહિત પરિણામો જાય છે. બીજું કે અખંડની સાથે સદ્ભાવરૂપ પરિણમન (વર્તે છે). ઐસે “...ધર્મીજીવકી બુદ્ધિપૂર્વક દેવાદિક પ્રત્યે સ્વરૂપ દઢીભૂત કરનેકે આશયકી પ્રવૃત્તિ મુખ્ય તૌરસે હોતી રહતી હૈ, ઐસા દિખતા હૈ.” શું કહે છે ? કે, એવા ધર્મીજીવને બુદ્ધિપૂર્વક દેવ, ગુરુ, શાસ્ત્ર પ્રત્યેના પરિણામ થાય છે. દા.ત. ભગવાનની પૂજા કરું, શ્રીગુરુ હોય તો એનો સત્સંગ કરું, એવા બુદ્ધિપૂર્વક (પરિણામ થાય છે). (એવા) ધર્મીજીવની બુદ્ધિપૂર્વક દેવાદિક પ્રત્યે જે પ્રવૃત્તિ થાય છે એ સ્વરૂપ દઢીભૂત કરવાના આશયથી થાય

છે. રાગ ખાતર રાગ નથી કરતાં. પણ તે-તે નિમિત્તોને એ વીતરાગતામાં નિમિત્ત બનાવે છે અથવા વીતરાગતા કેળવવાનો આશય છે, વીતરાગતા વધારવાનો આશય છે. રાગ વધારવાનો આશય નથી કેમકે એ ધર્મીજીવ છે.

“...ધર્મીજીવકી બુદ્ધિપૂર્વક દેવાદિક પ્રત્યે સ્વરૂપ દઢીભૂત કરનેકે આશયકી પ્રવૃત્તિ મુખ્ય તૌરસે હોતી રહતી હૈ,....” મોક્ષમાર્ગીજીવને તો મુખ્યપણે બાહ્ય પ્રવૃત્તિમાં પણ વીતરાગતા અને સ્વરૂપને દઢ કરવાનો જ આશય છે. “...ઐસા દિખતા હૈ.” એમ લાગે છે. “ઈસ પર વિશેષ સ્પષ્ટીકરણ ચાહા સો નિમ્ન હૈ :-” આ વાત ઉપર તમે સ્પષ્ટીકરણ ઈચ્છ્યું છે તો એ સ્પષ્ટીકરણ નીચે પ્રમાણે છે.

મુમુક્ષુ :- કોના ઉપરનો આ પત્ર છે ?

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- મારા ઉપરનો છે. મેં જ લખેલો કાગળ છે. ભાષા એવી રીતે લીધી છે, બન્ને બાજુના પડખા લઈને ભાષા લીધી છે ને એના ઉપર સ્પષ્ટીકરણ માંગ્યું છે કે, ધર્મીજીવને બુદ્ધિપૂર્વક દેવ, ગુરુ, શાસ્ત્ર પ્રત્યેના પરિણામ તો થાય છે ને એમાં તો સ્વરૂપ દઢીભૂત કરવાનો આશય હોય છે, મુખ્યપણે તો એ જ આશય છે. એવું લાગે છે (તો) આ વાત ઉપર તમારું શું સ્પષ્ટીકરણ છે ? તમે શું કહો છો ? (એના જવાબમાં) એક મુદ્દા પર સાત Point લખ્યાં છે. બહુ સરસ મુદ્દાઓ છે.

૧. “સ્વરૂપકી દઢતા દેવાદિક પ્રત્યેકી વૃત્તિસે નિશ્ચય હી નહીં હોતી.” જેટલો (પરિણામનો) અંશ બહાર જાય છે, તેટલું નુકસાન છે. તેનો લાભ નહિ ગણવો. બહુ સરસ કોઈ વાત કરી છે એ પહેલા એક જ વાક્યમાં

કરી દીધી છે કે, જ્ઞાની હોય તો પણ; એટલો અંશ બહાર ગયો ને (તો) બહાર ગયો તેટલું નુકસાન (છે). અંદર ગયો તેટલો લાભ. બસ ! બે ભાગ પાડી દીધાં. ત્યાં પણ કાંઈક લાભ છે, એ વાત સિદ્ધાંત બહારની છે, એમ કહેવું છે. સિદ્ધાંતમાં એ વાત નથી. નિશ્ચય સિદ્ધાંત જુઓ તો - પહેલો ખુલાસો નિશ્ચયથી કરી નાખ્યો. પછી હવે બીજી જુદી-જુદી અપેક્ષાઓ લેશે. પણ પહેલી એક વાત શુદ્ધ નિશ્ચયનયની કરી નાખી કે, “સ્વરૂપકી દેહતા દેવાદિક પ્રત્યેકી વૃત્તિસે નિશ્ચય હી નહીં હોતી.”

મુમુક્ષુ :- પરલક્ષે સ્વરૂપની દેહતા થાય જ નહિ.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- (હા), એમ કહેવું છે. ભલે ને સામે વીતરાગદેવ હોય ! સિદ્ધાંત બાંધી દીધો. હવે એમાં શું છે કે, (માનો કે એક) ધર્મીજીવ છે (એ) વીતરાગદેવના દર્શન કરે છે. એ ઉપયોગ (બહાર) ગયો એ લાભનું કારણ નથી (પરંતુ) ઉપયોગ પાછો વળ્યો એ લાભનું કારણ છે. (ધર્મીજીવ) ભગવાનની વીતરાગતા જોવે છે. (હવે) ભગવાનની વીતરાગતા જોવે છે ત્યારે સીધું સ્વરૂપ સ્મરણ આવે છે કે, મારું સ્વરૂપ પણ બરાબર આવું છે. પછી (ઉપયોગ) જે પોતાની બાજુ વળ્યો એ લાભ છે. તો એ પૂર્વપર્યાયને નિમિત્ત કહેવામાં આવે છે. આ જવાબમાં સૂક્ષ્મતા છે.

શું કહેવું છે ? જે ઉપયોગ દેવ પ્રત્યે ગયો એ તો ‘પરદેવાઓ દુગઈ’ જે કુંદકુંદાચાર્યદેવે અષ્ટપાહુડમાં કહ્યું (અને) જે ગુરુદેવ કહેતાં હતાં. પરદ્રવ્ય તરફ (જે પરિણામ ગયા) એ આત્માને ગતિ કરવા જેવાં જ પરિણામ નથી. ભલે ને સામે વીતરાગદેવ બિરાજમાન હોય, (એ) આત્માને ગતિ કરવા જેવું પરિણામ જ નથી. પોતાને એ બાજુ પરિણામની ગતિ જ ન હો !! (પણ) ત્યાંથી જે પાછો વળે છે ત્યારે એને નિમિત્ત કહેવાય છે કે, ભગવાનના નિમિત્તે પણ લાભ થયો. પણ (ખરેખર) તો એ પાછો વળ્યો એનો લાભ થયો છે. (ધર્મીજીવને અંદરમાં) પરિણતિ ચાલતી હોય એટલે જે સ્વસંવેદનનું સ્મરણ લીધું, જે સાવધાની લીધી (એમાં) વિશેષ (સ્વરૂપ) સાવધાની આવિર્ભૂત કરે છે તો એને ત્યાં નિમિત્ત કહેવાય છે. કેમકે એ સિવાયના પણ એ ઉપયોગને

- પરિણામને બીજા નિમિત્તો છે, ઉપયોગને એ સિવાયના પણ નિમિત્તો તો છે પણ આને (દેવદર્શનને) એટલા માટે કહેવાય છે કે ત્યાંથી આ (નિજસ્વરૂપ) બાજુ વળી જાય છે. તો એમ કહેવાય કે, એમનો આશય એ હતો, દર્શન કરવા જ એટલા માટે ગયા હતાં. શું કરવા ભગવાનના બુદ્ધિપૂર્વક દર્શન કરવા ગયા ? કે, અંદર વળવું હતું માટે. એ નિમિત્તે પણ એમને પોતાના તરફનો ભાવ આવિર્ભાવ કરવો હતો, સ્વરૂપનો ભાવ આવિર્ભાવ કરવો હતો. તો (અહીંયા એમ કહે છે કે), પણ એટલો તો (ઉપયોગ) બહાર ગયો ને ! એ લાભનું કારણ નથી. (સ્વરૂપ બાજુ) વળ્યા એ ભલે લાભનું કારણ હોય, પણ એકલા લાભનું કારણ નથી. એ કટકો જુદો પાડી દો, એમ કહે છે. બહુ સારી વાત લીધી છે.

મુમુક્ષુ :- બહારમાં ત્યાં ઉપયોગ ગયો એ તો નુકસાનનું જ કારણ છે પણ ત્યાંથી પાછો વળીને જે પોતામાં આવ્યો એટલે એને નિમિત્ત કહેવામાં આવ્યું.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- હા, એટલે નિમિત્ત કહેવાય છે. પણ એ (ઉપયોગ) બહાર ગયો એનો પહેલા નિષેધ કરો, એ નિશ્ચય પહેલા પકડો, એમ કહે છે. એમની ચર્ચામાં જે મજા હતી, એ આ વાતની હતી. હું ગમે તે પ્રશ્ન કાઢું પણ એ કેવી રીતે વાતને ઉઠાવતા હતાં ! (એમને) જોર બહુ હતું, જોર બહુ હતું. એટલે એ જોરમાં જ એ વાતને એવી રીતે પકડાવતાં હતાં. એ પદ્ધતિથી જ ચર્ચા ચાલતી હતી. એમની ચર્ચાનો ઢંગ અને પદ્ધતિ જ એ હતી. એ વિશેષતા હતી.

મુમુક્ષુ :- સાચી રીત પણ એ જ છે ને ?

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- હા, શુદ્ધ નિશ્ચય છે, આ તો એકદમ શુદ્ધનિશ્ચય છે. હવે, આગળ ચાલે છે.

૨. “મનઆશ્રિત (વિચારપૂર્વક) માન્યતાસે યથાર્થ અખંડઆશ્રિત સહજ આંશિકવૃત્તિકા સદ્ભાવ (ઉદ્ભવ) નહીં હો સકતા.” હવે, માન્યતાનો વિષય લે છે. પહેલા આચરણનો વિષય લીધો, હવે માન્યતાનો લે છે. પછી આગળ જુદાં-જુદાં પડખાં લેશે. પત્ર બહુ સારો છે ! એક Issue આપો તો એ વિષયને કેટલાં પડખેથી વિચારે છે (એ) ખ્યાલ આવે એવું છે. સાધારણનું એ કામ નથી. (સમય પૂરો થયો છે).

શ્રી જિનેન્દ્રદેવ, જેમણે સાધના પ્રગટ કરી છે એવા ઉપકારી ગુરુ અને શાસ્ત્ર તેની કેમ પ્રભાવના થાય તેવી તેને પ્રીતિ હોય છે. જેમણે આત્માનો માર્ગ બતાવ્યો, તે માર્ગની પ્રાપ્તિ માટે માર્ગદર્શન આપ્યું અને જેનો પરમ ઉપકાર છે તેમની કેમ પ્રભાવના થાય તેવો હેતુ પાત્ર શિષ્યને હોય છે, બીજો કોઈ અન્ય હેતુ તેનો હોતો નથી. આ પાત્ર જીવનું લક્ષણ છે.

(સ્વાનુભૂતિદર્શન-૨૪૩)



પ્રશ્ન :- ધાર્મિક સંસ્થાનાં કાર્યો કરવામાં પ્રયોજનમાં શું લેવું ? જોડાવું કે નહીં ?

સમાધાન :- ધાર્મિક કાર્યોમાં દેવ-શાસ્ત્ર-ગુરુની પ્રભાવના થતી હોય, પોતાને તેનો વિકલ્પ આવતો હોય તો તેમાં જોડાય છે. દેવ-શાસ્ત્ર-ગુરુની પ્રભાવના અર્થે અને પોતાના આત્માના અર્થે તેમાં જોડાય છે. બીજું કોઈ પ્રયોજન હોતું નથી. (સ્વાનુભૂતિદર્શન-૨૪૪)



પ્રશ્ન :- તેમાં આત્મા જ મુખ્ય હોય છે ?

સમાધાન :- આત્મા જ મુખ્ય છે. મારા આત્મામાં સંસ્કાર કેમ પડે, તે સંસ્કાર દઢ કેમ થાય, હું ચૈતન્ય ન્યારો છું, એવું જ તેનું પ્રયોજન છે. પોતાને ધર્મની પ્રીતિ છે, તેથી ધર્મની પ્રભાવના કેમ થાય, ગુરુદેવની પ્રભાવના કેમ થાય, ગુરુના ધર્મની શોભા કેમ વધે, કોઈ આ માર્ગ જાણે તેવો શુભભાવનો વિકલ્પ આવે છે. જેને પોતાના સ્વભાવની પ્રીતિ છે, તેને ગુરુએ જે માર્ગ બતાવ્યો છે તેની અને ગુરુની ભક્તિ આવ્યા વગર રહેતી નથી, તેથી શુભ કાર્યોમાં જોડાય છે પણ તેમાં તેનો હેતુ આત્માનો છે.

(સ્વાનુભૂતિદર્શન-૨૪૫)



પ્રશ્ન :- એક સમયની જ્ઞાનની પર્યાયને કોઈવાર શાસ્ત્રમાં જ્ઞેય તરીકે કહે છે, કોઈવાર પર્યાય છે માટે હેય છે તેમ કહેવાય છે ને કોઈ વખત પ્રગટ કરવા

માટે તેને ઉપાદેય કહેવાય છે. એક પર્યાય સંબંધી શાસ્ત્રમાં ઘણા પ્રકાર આવે છે તો ભેદજ્ઞાનની જ્યોતિ પ્રગટ કરવા માટે કઈ વાત મુખ્ય કરવી ? હેય-જ્ઞેય-ઉપાદેય કઈ રીતે કરવું ? તે ફરમાવશોજી.

સમાધાન :- અખંડ સ્વભાવ ઉપર દષ્ટિ કરતાં જે પર્યાયો પ્રગટે છે તે આત્માનું મૂળ સ્વરૂપ નથી, માટે દષ્ટિ અપેક્ષાએ તેને હેય કહે છે. જ્ઞાનની અપેક્ષાએ તેને જાણવાયોગ્ય કહેવાય છે, પણ જે અધૂરી સાધનાની પર્યાય છે તે વચ્ચે આવ્યા વગર રહેતી નથી. તે જ્ઞાનમાં જાણવાયોગ્ય છે અને તે પ્રગટ કરવાની અપેક્ષાએ આદરવાયોગ્ય છે. જ્ઞાન-દર્શનની જે અધૂરી પર્યાયો છે તે એક સમયમાં પૂર્ણ થતી નથી, ચારિત્ર પણ એકસાથે પરિપૂર્ણ પ્રગટ થતું નથી. તેથી તેને સાધના કરવાની રહે છે, સ્વરૂપમાં લીનતા કરવાની રહે છે. તેથી તે પર્યાયને જ્ઞાન આદરણીય પણ જાણે છે.

નિશ્ચય-વ્યવહારની સંધિ જેમ છે તેમ સમજે તો સાધનામાં આગળ જાય છે. દષ્ટિમાં જ્ઞાયકને એકને મુખ્ય રાખીને અધૂરી-પૂર્ણ પર્યાયને પણ ગૌણ કરવામાં આવે છે. અધૂરી-પૂર્ણ પર્યાય જેટલો હું નથી, હું તો અખંડ જ્ઞાયક છું. કેવળજ્ઞાનની પર્યાય પ્રગટ થાય તોપણ તે પર્યાય છે. હું તો અખંડ એક દ્રવ્ય છું. સમ્યગ્દર્શનથી માંડીને જે નિર્મળ પર્યાયો પ્રગટ થાય છે તે બધી સાધનામાં વચ્ચે આવે છે, તેથી તે પ્રગટ કરવાની અપેક્ષાએ તે ઉપાદેય છે; સાધના કરતાં કેવળજ્ઞાનની પર્યાય પ્રગટ થાય છે, તે અપેક્ષાએ તે ઉપાદેય છે; પણ દષ્ટિની અપેક્ષાએ તેને હેય કહેવામાં આવે છે.

(સ્વાનુભૂતિદર્શન-૨૪૬)



પૂજ્ય બહેનશ્રીની તત્ત્વચર્ચા



પ્રશ્ન :- જિજ્ઞાસુ શુભભાવને હેય સમજે છે અને આવ્યા વગર રહેતા પણ નથી તેમ કેવી રીતે બંને વાત સમજે છે ?

સમાધાન :- હા, જિજ્ઞાસુ એમ સમજે છે. તેને શ્રદ્ધા છે કે શુભભાવ તો હેય છે, તો પણ વચ્ચે આવ્યા વગર રહેતા નથી. શુભભાવ આવે તો શ્રદ્ધામાં ભૂલ પડે છે એમ નથી. બહુ ભક્તિ કરે તો તેને વ્યવહારનો પક્ષ થઈ ગયો છે તેમ નથી. જિજ્ઞાસુ અંતરમાં પોતે જાણતો હોય છે, તેની શ્રદ્ધામાં હોય છે કે ગુરુએ કહ્યું છે કે તારો શુદ્ધાત્મા જુદો છે, શુભભાવ તારું સ્વરૂપ નથી. આ તેણે સ્વયં પણ નક્કી કરેલું છે તેથી તેની શ્રદ્ધામાં ભૂલ થતી નથી. (સ્વાનુભૂતિદર્શન-૨૪૦)



પ્રશ્ન :- જિજ્ઞાસુ મહિમા તો એમ જ કરે છે કે ગુરુદેવ ! આપે જ બધું-સર્વસ્વ આપ્યું છે.

સમાધાન :- ગુરુદેવ ! આપ જ સર્વસ્વ છો; આપે જ અમને બધું આપ્યું છે; આપ અહીં પધાર્યા-આપે માર્ગ બતાવ્યો તો અમે જાગૃત થયા; આપે પુરુષાર્થ કરતાં શીખવ્યું છે; - તે પ્રમાણે બધી વિનયની ભાષા બોલે પણ અંતરથી સમજે છે કે કરવાનું તો મારે છે. ગુરુદેવનો પરમ પરમ ઉપકાર છે એમ તે સમજે છે, અમારી દિશા બદલી હોય તો આપે જ બદલાવી છે એમ ઉપકારબુદ્ધિમાં તેને આવે છે. શુભભાવમાં એમ જ આવે છે. (સ્વાનુભૂતિદર્શન-૨૪૧)



પ્રશ્ન :- સમયસારની ૩૮મી ગાથામાં અપ્રતિહતની વાત આવી હતી. પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી અવારનવાર કહેતા હતા કે બહેનશ્રીના જાતિસ્મરણજ્ઞાનમાં જોડણી ક્ષાયિકની વાત હતી, તો કૃપા કરીને જોડણી ક્ષાયિક સમકિત એટલે શું ? તે કોને પ્રગટ થાય ? તેનો ખુલાસો કરશોજી.

સમાધાન :- જોડણી ક્ષાયિક તો જેને અપ્રતિહત ધારા હોય છે તેને પ્રગટ થાય છે. શુદ્ધાત્માની

સાધનાની વિશેષ વિશેષ પર્યાયો જોડાતી જાય તો અપ્રતિહત ધારાએ જોડણી ક્ષાયિક પ્રગટ થાય છે.

મુમુક્ષુ :- હજુ સ્પષ્ટ થયું નથી તો વધારે ખુલાસો કરવા કૃપા કરશોજી.

બહેનશ્રી :- તે ક્ષયોપશમ (ક્ષયોપશમ સમકિત) એવું અપ્રતિહત હોય છે કે જે પડવાનું નથી. તેની બધી પર્યાયો અપ્રતિહતભાવે પ્રગટ થાય છે. જોડણી ક્ષાયિકમાં ધારા જ એવી અપ્રતિહત ધારાએ પ્રગટ થાય છે. (સ્વાનુભૂતિદર્શન-૨૪૨)



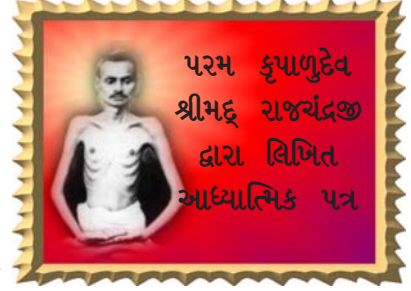
પ્રશ્ન :- પાત્ર શિષ્યનાં મુખ્ય લક્ષણો સંબંધી થોડું માર્ગદર્શન આપો.

સમાધાન :- પાત્ર શિષ્ય હોય તેને અંતરથી આત્માની જ લગની લાગી હોય કે મારે એક ચૈતન્ય જ જોઈએ છે, બીજું કંઈ જોઈતું નથી. તેને દરેક કાર્યમાં આત્માનું જ પ્રયોજન હોય છે, બીજું બધું પ્રયોજન તેને ગૌણ થાય છે. આત્માને એકને મુખ્ય રાખીને તેનાં દરેક કાર્યો હોય છે. શુભભાવનાં કાર્યોમાં પણ તેને એક આત્માનું પ્રયોજન હોય છે, બીજું બહારનું કોઈ પ્રયોજન તેને હોતું નથી. શુભભાવમાં દેવ-શાસ્ત્ર-ગુરુની પ્રભાવના કેમ થાય તેવા ભાવ આવે છે અને આત્માનું પ્રયોજન સાથે હોય છે, બીજું કોઈ પ્રયોજન હોતું નથી.-લૌકિક પ્રયોજનથી અત્યંત ન્યારો હોય છે. તેને તો એક આત્માની જ લગની લાગી છે; લૌકિકનું, બહારનું કે મોટાઈનું કોઈ પ્રયોજન હોતું નથી. મારા આત્માને કેમ લાભ થાય તે એક જ પ્રયોજન આત્માર્થને હોય છે. (શેષ અંશ પૃષ્ઠ સંખ્યા-૨૦ ઉપર)

૨૯૫

મુંબઈ, ૧૯૪૭

ચિત્તની જો સ્થિરતા થઈ હોય તો તેવા સમય પરત્વે સત્પુરુષોના ગુણોનું ચિંતન, તેમનાં વચનોનું મનન, તેમના ચારિત્રનું કથન, કીર્તન, અને પ્રત્યેક ચેષ્ટાનાં ફરી ફરી નિદિધ્યાસન એમ થઈ શકતું હોય તો મનનો નિગ્રહ થઈ શકે ખરો; અને મન જીતવાની ખરેખરી કસોટી એ છે. એમ થવાથી ધ્યાન શું છે એ સમજાશે. પણ ઉદાસીનભાવે ચિત્તસ્થિરતા સમય પરત્વે તેની ખૂબી માલૂમ પડે.



૨૯૮

વવાણિયા, કાર્તિક સુદ ૪, ગુરુ, ૧૯૪૮

કાળ વિષમ આવી ગયો છે. સત્સંગનો જોગ નથી, અને વીતરાગતા વિશેષ છે, એટલે ક્યાંય સાતું નથી, અર્થાત્ મન વિશ્રાંતિ પામતું નથી. અનેક પ્રકારની વિટંબના તો અમને નથી, તથાપિ નિરંતર સત્સંગ નહીં એ મોટી વિટંબના છે. લોકસંગ રુચતો નથી.

૩૧૩

મુંબઈ, પોષ સુદ ૭, ગુરુ, ૧૯૪૮

જ્ઞાનીના આત્માને અવલોકીએ છીએ અને તેમ થઈએ છીએ.

આપની સ્થિતિ લક્ષમાં છે. આપની ઈચ્છા પણ લક્ષમાં છે; ગુરુ-અનુગ્રહવાળી વાર્તા લખી તે પણ ખરી છે. કર્મનું ઉદયપણું ભોગવવું પડે તે પણ ખરું છે. આપ અતિશય ખેદ વખતોવખત પામી જાઓ છો, તે પણ જાણીએ છીએ. વિયોગનો તાપ અસહ્ય આપને રહે છે તે પણ જાણીએ છીએ. ઘણા પ્રકારે સત્સંગમાં રહેવા જોગ છો એમ માનીએ છીએ, તથાપિ હાલ તો એમ સહન કરવું યોગ્ય માન્યું છે.

ગમે તેવા દેશકાલને વિષે યથાયોગ્ય રહેવું, યથાયોગ્ય રહેવા ઈચ્છ્યા જ કરવું એ ઉપદેશ છે. મનની ચિંતા લખી જણાવો તોય અમને તમારા ઉપર ખેદ થાય તેમ નથી. જ્ઞાની અન્યથા કરે નહીં, તેમ કરવું તેને સૂઝે નહીં, ત્યાં બીજો ઉપાય ઈચ્છવો પણ નહીં એમ વિનંતી છે.

કોઈ એવા પ્રકારનો ઉદય છે કે, અપૂર્વ વીતરાગતા છતાં વેપાર સંબંધી કંઈક પ્રવર્તન કરી શકીએ છીએ, તેમ જ બીજાં પણ ખાવાપીવા વગેરેનાં પ્રવર્તન માંડ માંડ કરી શકીએ છીએ. મન ક્યાંય વિરામ પામતું નથી, ઘણું કરીને અત્ર કોઈનો સમાગમ ઈચ્છતું નથી. કંઈ લખી શકાતું નથી. વધારે પરમાર્થવાક્ય વદવા ઈચ્છા થતી નથી, કોઈએ પૂછેલા પ્રશ્નોનો ઉત્તર જાણતાં છતાં લખી શકતા નથી, ચિત્તનો પણ ઝાઝો સંગ નથી, આત્મા આત્મભાવે વર્તે છે.

સમયે સમયે અનંતગુણવિશિષ્ટ આત્મભાવ વધતો હોય એવી દશા રહે છે, જે ઘણું કરીને કળવા દેવામાં આવતી નથી. અથવા કળી શકે તેવાનો પ્રસંગ નથી.

આત્માને વિષે સહજ સ્મરણે પ્રાપ્ત થયેલું જ્ઞાન શ્રી વર્ધમાનને વિષે હતું એમ જણાય છે. પૂર્ણ વીતરાગ જેવો બોધ તે અમને સહેજે સાંભરી આવે છે, એટલે જ તમને અને ગોસલિયાને લખ્યું હતું કે તમે પદાર્થને સમજો. બીજો કોઈ તેમ લખવામાં હેતું નહોતો.

(શેષ અંશ પૃષ્ઠ સંખ્યા-૧૫ ઉપર)